जून-२०१९ ◆ वर्ष ८ ◆ अंक ०१ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

जून-२०१९

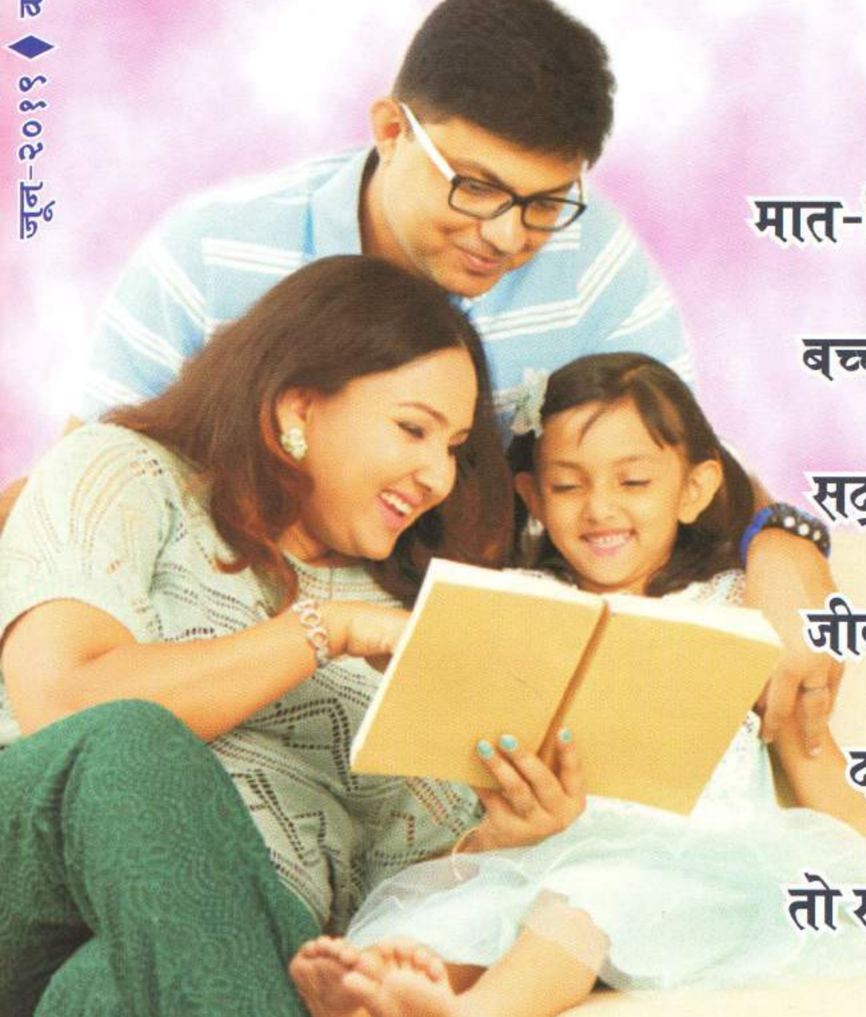

मात-पिता की सुन्दर शिक्षा,

बच्चों को यदि मिल जाये।

सद्गुणों की खान उनका,

जीवन निश्चित बन जाये।

दयानन्द कहते ऐसा हो,

तो राष्ट्र समुन्नत हो जाये।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६०

एक सम्पूर्ण उपहार
हर अवसर के लिए
आठ एअर टाइट डिब्बों वाली मसाले दानी (मसाले सहित) का गिफ्ट पैक हर अवसर पर उपहार में देने के लिए उत्तम। उपहार पाने वाला आपको और एम डी एच मसालों की खुशबू और स्वाद को हमेशा याद करता रहेगा। यह मिठाई से सस्ता और शुद्धता से भरपूर है।
MDH
Assorted Spices Box
GIFT PACK
गिफ्ट पैक की कीमत सिर्फ 550/- रू०
MDH मसाले
असली मसाले सच - सच
Garam masala
Kitchen King
Chana masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
HALDI POWDER
LAL MIRCH POWDER
DHANIA POWDER
मिलने में असुविधा होने पर कृपया सम्पर्क करें
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली - 110015, 011 - 41425106 - 07 - 08
ESTD. 1919 E - mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - 11000 रु.	$ 1000
आजीवन - 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय - 400 रु.	$ 100
वार्षिक - 100 रु.	$ 25
एक प्रति - 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२०
ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
विक्रम संवत् २०७६
दयानन्दाब्द १९५

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

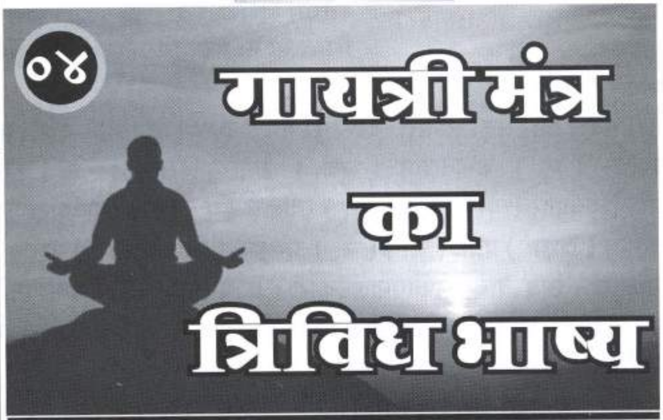

कवर पृष्ठ : पितृ दिवस

June - 2019

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २६
हलचल २७

०७ बाह्य एवं आन्तरिक सुरक्षा
१० सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१९
१३ वंदे मातरम्
१७ ज्योतिष साहित्य में पृथ्वी
२१ शान्ति सम्भव 'वैदिक धर्म' से
२३ धैर्य (धृति या सहनशीलता)
२४ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए
२५ अनेकानेक बधाई हो
२८ स्वास्थ्य- तम्बाकू एक महाविष
२९ कथा सरित- मैं ही क्यों?
३० सत्यार्थ पीयूष- देवता कौन?

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग़, उदयपुर

वर्ष - ८ अंक - ०१

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

गायत्री मन्त्र का त्रिविध भाष्य

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।। - यजुर्वेद ३६/०३

महर्षि दयानन्द भाष्य

भूः। भुवः। स्वः। तत्। सवितुः। वरेण्यम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि।। धियः। यः। नः। प्रचोदयादिति प्रऽचोदयात्।।

पदार्थ- (**भूः**) कर्मविद्याम् (**भुवः**) उपासनाविद्याम् (**स्वः**) ज्ञानविद्याम् (**तत्**) इन्द्रियैरग्राह्यं परोक्षम् (**सवितुः**) सकलैश्वर्यप्रदस्येश्वरस्य (**वरेण्यम्**) स्वीकर्त्तव्यम् (**भर्गः**) सर्वदुःखप्रणाशकं तेजःस्वरूपम् (**देवस्य**) कमनीयस्य (**धीमहि**) ध्यायेम (**धियः**) प्रज्ञाः (**यः**) (**नः**) अस्माकम् (**प्रचोदयात्**) प्रेरयेत्।।

भावार्थ- अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः कर्मोपासनाज्ञानविद्याः संगृह्याखिलैश्वर्ययुक्तेन परमात्मना सह स्वात्मनो युंजतेऽधर्माऽनैश्वर्यदुःखानि विधूय धर्मैश्वर्यसुखानि प्राप्नुवन्ति तानन्तर्यामिजगदीश्वरः स्वयं धर्मानुष्ठानमधर्मत्यागं च कारयितुं सदैवेच्छति।।

पदार्थ- हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (भूः) कर्मकाण्ड की विद्या (भुवः) उपासना काण्ड की विद्या और (स्वः) ज्ञानकाण्ड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के (यः) जो (नः) हमारी (धियः) धारणावती बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे उस (देवस्य) कामना के योग्य (सवितुः) समस्त ऐश्वर्य के देनेवाले परमेश्वर के (तत्) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (वरेण्यम्) स्वीकार करने योग्य (भर्गः) सब दुःखों के नाशक तेजःस्वरूप का (धीमहि) ध्यान करें, वैसे तुम भी इसका ध्यान करो।।

भावार्थ- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य और दुःख रूप मलों को छुड़ा के धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता (ते) है।।

इसका भाष्य Ralph T.H. Griffith ने इस प्रकार किया है-

May we attain that excellent glory of Savitar the God. So may he stimulate our prayers.

यह भाष्य आध्यात्मिक है परन्तु विज्ञ पाठक स्वयं **इसकी तुलना महर्षि दयानन्द के भाष्य से करके ग्रिफिथ के वैदुष्य का स्तर जान सकते हैं।**

विचार बिन्दु-

यह मन्त्र (व्याहृति रहित रूप में) यजु.३/३५; २२/९; ३०/२; ऋ. ३/६२/१०; सामवेद १४६२ में भी विद्यमान है। यह ऐतरेय ब्राह्मण में भी अनेकत्र आया है। इनमें से यजुर्वेद ३०/२ में इस मन्त्र का ऋषि नारायण तथा अन्यत्र विश्वामित्र है। देवता सविता, छन्द निचृद् बृहती एवं स्वर षड्ज है। व्याहृतियों का छन्द दैवी बृहती तथा स्वर व्याहृतियों सहित सम्पूर्ण मन्त्र का मध्यम षड्ज है। महर्षि दयानन्द ने सर्वत्र ही इसका भाष्य आध्यात्मिक किया है। केवल यजुर्वेद ३०/२ के भावार्थ में आधिभौतिक का स्वल्प संकेत भी है, शेष आध्यात्मिक ही है। एक विद्वान् ने कभी हमें कहा था कि गायत्री मन्त्र जैसे कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक के अतिरिक्त अन्य प्रकार से भाष्य हो ही नहीं सकता। हम संसार के सभी वेदज्ञों को घोषणापूर्वक कहना चाहते हैं कि वेद का प्रत्येक मन्त्र इस सम्पूर्ण सृष्टि में अनेकत्र vibrations के रूप में विद्यमान है। इन मन्त्रों की इस रूप में उत्पत्ति पृथिव्यादि लोकों की उत्पत्ति से भी पूर्व में हो गयी थी। इस कारण प्रत्येक मन्त्र का आधिदैविक भाष्य अनिवार्यतः होता है। त्रिविध अर्थ प्रक्रिया में सर्वाधिक व सर्वप्रथम सम्भावना इसी प्रकार के अर्थ की होती है।

आध्यात्मिक भाष्य तो महर्षि ने किया हुआ ही है। हम यहाँ अपने आधिदैविक तथा आधिभौतिक भाष्य प्रस्तुत कर रहे हैं।

मेरा आधिदैविक भाष्य

इस ऋचा का देवता सविता है। सविता के विषय में ऋषियों का कथन है-

''**सविता सर्वस्य प्रसविता**'' (नि.१०.३१), ''**सविता वै देवानां प्रसविता**'' (श.१.१.२.१७), ''**सविता वै प्रसवानामीशे**'' (ऐ.१.३०), ''**प्रजापतिर्वै सविता**'' (तां.१६.५.१७), ''**मनो वै सविता**'' (श.६.३.१.१३), ''**विद्युदेव सविता**'' (गो.पू.१.३३), ''**पशवो वै सविता**'' (श.३.२.३.११), ''**प्राणो वै सविता**'' (ऐ.१.१९), ''**वेदा एव सविता**'' (गो.पू.१.३३), ''**सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः**'' (तै.ब्रा.२.५.७.४)

इससे निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं-

सविता नामक पदार्थ सबकी उत्पत्ति व प्रेरणा का स्रोत वा साधन है।

यह सभी प्रकाशित व कामना अर्थात् आकर्षणादि बलों से युक्त कणों का उत्पादक व प्रेरक है।

यह सभी उत्पन्न पदार्थों का नियन्त्रक है।

'ओम्' रश्मि रूप छन्द रश्मि एवं मनस्तत्व ही सविता है।

विद्युत् को भी 'सविता' कहते हैं।

विभिन्न मरुद् रश्मियाँ एवं दृश्य कण 'सविता' कहलाते हैं।

विभिन्न प्राण रश्मियाँ 'सविता' कहलाती हैं।

सभी छन्द रश्मियाँ भी 'सविता' हैं।

तारों के केन्द्रीय भाग रूप राष्ट्र को प्रकाशित व उनका पालन करने वाला सम्पूर्ण तारा भी 'सविता' कहाता है।

यह हम पूर्व में लिख चुके हैं कि देवता किसी भी मंत्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय होता है। इस कारण इस मंत्र का मुख्य प्रतिपाद्य 'ओम्' छन्द रश्मि, मनस्तत्व, प्राण तत्व एवं सभी छन्द रश्मियाँ हैं। इस ऋचा की उत्पत्ति विश्वामित्र ऋषि {**वाग् वै विश्वामित्रः (कौ.ब्रा.१०.५), विश्वामित्रः सर्वमित्रः (नि.२.२४)**} अर्थात् सबको आकृष्ट करने में समर्थ 'ओम्' छन्द रश्मियों से होती है।

आधिदैविक भाष्य- (भूः) 'भूः' नामक छन्द रश्मि किंवा अप्रकाशित कण वा लोक, (भुवः) 'भुवः' नामक रश्मि किंवा आकाश तत्व, (स्वः) 'सुवः' नामक रश्मि किंवा प्रकाशित कण, फोटोन वा सूर्यादि तारे आदि से युक्त। (तत्) उस अगोचर वा दूरस्थ सविता अर्थात् मन, 'ओम्' रश्मि, सभी छन्द रश्मियाँ, विद्युत् सूर्यादि आदि पदार्थों को (वरेण्यम् भर्गः देवस्य) सर्वतः आच्छादित करने वाला व्यापक {**भर्गः = अग्निर्वै भर्गः (श.१२.३.४.८), आदित्यो वै भर्गः (जै.उ.४.१२.२.२), वीर्यं वै भर्गऽएष विष्णुर्यज्ञः (श.५.४.५.१), अयं वै (पृथिवी) लोको भर्गः (श.१२.३.४.७)**} आग्नेय तेज, जो सम्पूर्ण पदार्थ को व्याप्त करके अनेक संयोजक व सम्पीडक बलों से युक्त हुआ प्रकाशित व अप्रकाशित लोकों के निर्माण हेतु प्रेरित करने में समर्थ होता है, (धीमहि) प्राप्त होता है अर्थात् वह सम्पूर्ण पदार्थ उस आग्नेय तेज, बल आदि को व्यापक रूप से धारण करता है। (धियः यः नः प्रचोदयात्) जब वह उपर्युक्त आग्नेय तेज उस पदार्थ को व्याप्त कर लेता है, तब विश्वामित्र ऋषि संज्ञक मन व 'ओम्' रश्मि रूप पदार्थ {**धीः = कर्मनाम (निघं.२.१), प्रज्ञानाम (निघं.३.९), वाग् वै धीः (ऐ.आ.१.१.४)**} नाना प्रकार की वाग् रश्मियों को विविध दीप्तियों व क्रियाओं से युक्त करता हुआ अच्छी प्रकार प्रेरित व नियन्त्रित करने लगता है।

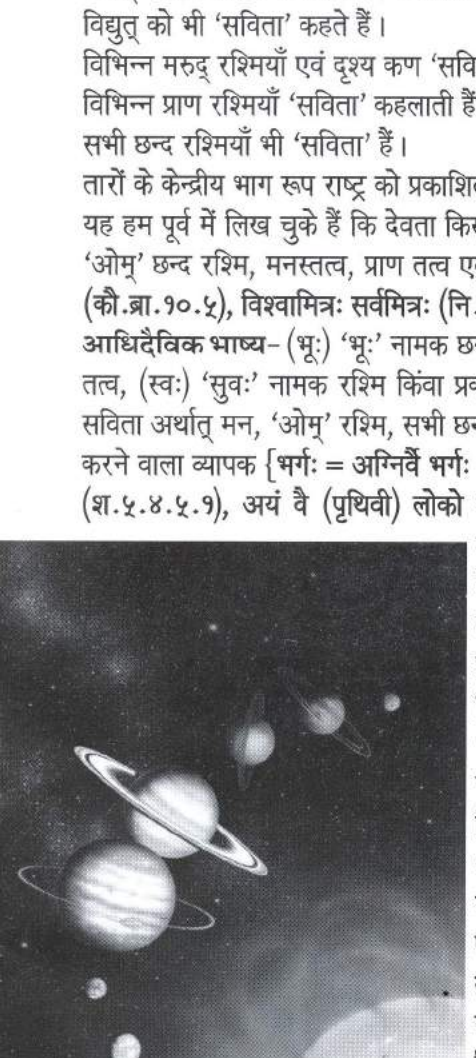

भावार्थ- मन एवं 'ओम्' रश्मियां व्याहृति रश्मियों से युक्त होकर क्रमशः सभी मरुद्, छन्द आदि रश्मियों को अनुकूलता से सक्रिय करते हुए सभी कण, क्वाण्टा एवं आकाश तत्व को उचित बल व नियन्त्रण से युक्त करती हैं। इससे सभी लोकों तथा अन्तरिक्ष में विद्यमान पदार्थ नियन्त्रित ऊर्जा से युक्त होकर अपनी-२ क्रियाएँ समुचित रूपेण सम्पादित करने में समर्थ होते हैं। इससे विद्युत् बल भी सम्यक् नियंत्रित रहते हैं।

सृष्टि में इस ऋचा का प्रभाव- इस ऋचा की उत्पत्ति के पूर्व विश्वामित्र ऋषि अर्थात् 'ओम्' छन्द रश्मियाँ विशेष सक्रिय होती हैं। इसका छन्द दैवी बृहती, निचृद् गायत्री होने से इसके छान्दस प्रभाव से विभिन्न प्रकाशित कण वा रश्मि आदि पदार्थ तीक्ष्ण

तेज व बल प्राप्त करके सम्पीडित होने लगते हैं। इसके दैवत प्रभाव से मनस्तत्व एवं 'ओम्' छन्द रश्मि रूप सूक्ष्मतम पदार्थों से लेकर विभिन्न प्राण, मरुत् छन्द रश्मियाँ, विद्युत् के साथ-साथ सभी दृश्य कण वा क्वाण्टाज् प्रभावित अर्थात् सक्रिय होते हैं। इस प्रक्रिया में 'भूः', 'भुवः' एवं 'सुवः' नामक सूक्ष्म छन्द रश्मियाँ 'ओम्' छन्द रश्मि के द्वारा विशेष संगत व प्रेरित होती हुई कण, क्वाण्टा, आकाश तत्व तक को प्रभावित करती हैं। इससे इन सभी में बल एवं ऊर्जा की वृद्धि होकर सभी पदार्थ विशेष सक्रियता को प्राप्त होते हैं। इस समय होने वाली सभी क्रियाओं में जो-जो छन्द रश्मियाँ अपनी भूमिका निभाती हैं, वे सभी विशेष उत्तेजित होकर नाना कर्मों को समृद्ध करती हैं। विभिन्न लोक चाहे, वे तारे आदि प्रकाशित लोक हों अथवा पृथिव्यादि ग्रह वा उपग्रहादि अप्रकाशित लोक हों, सभी की रचना के समय यह छन्द रश्मि अपनी भूमिका निभाती है। इसके प्रभाव से सम्पूर्ण पदार्थ में विद्युत् एवं ऊष्मा की वृद्धि होती है परन्तु इस स्थिति में भी यह छन्द रश्मि विभिन्न कणों वा क्वाण्टाज् को सक्रियता प्रदान करते हुए भी अनुकूलता से नियन्त्रित रखने में सहायक होती है। **हमारे 'वेद-विज्ञान आलोक' ग्रन्थ के खण्ड ४.३२, ५.५ एवं ५.१३ में पाठक इस ऋचा का ऐसा ही प्रभाव देख सकते हैं।** हाँ, वहाँ व्याहृतियों की अविद्यमानता अवश्य है। इसके षड्ज स्वर के प्रभाव से ये रश्मियाँ अन्य रश्मियों को आश्रय देने, नियन्त्रित करने, दबाने एवं वहन करने में सहायक होती हैं। व्याहृतियों का मध्यम स्वर इन्हें विभिन्न पदार्थों के मध्य प्रविष्ट होकर अपनी भूमिका निभाने का संकेत देता है। छन्द व स्वर के प्रभाव हेतु पूर्वोक्त छन्द प्रकरण को पढ़ना अनिवार्य है।

मेरा आधिभौतिक भाष्य

आधिदैविक भाष्य व वैज्ञानिक प्रभाव को दर्शाने के पश्चात् हम इस मंत्र के आधिभौतिक अर्थ पर विचार करते हैं-

{भूः= कर्मविद्याम्, भुवः= उपासनाविद्याम्, स्वः= ज्ञानविद्याम् (म.द.य.भा.३६.३)। सविता= योग पदार्थज्ञानस्य प्रसविता (म.द.य.भा.११.३), सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः (तै.ब्रा.२.५.७.४)}

कर्मविद्या, उपासनाविद्या एवं ज्ञानविद्या इन तीनों विद्याओं से सम्पन्न (सवितुः) (देवस्य) दिव्य गुणों से युक्त राजा, माता-पिता किंवा उपदेशक आचार्य अथवा योगी पुरुष के (वरेण्यम्) स्वीकरणीय श्रेष्ठ (भर्गः) पापादि दोषों को नष्ट करने वाले, समाज, राष्ट्र व विश्व में यज्ञ अर्थात् संगठन, त्याग, बलिदान के भावों को समृद्ध करने वाले उपदेश वा विधान को (धीमहि) हम सब मनुष्य धारण करें। (यः) ऐसे जो राजा, योगी, आचार्य वा माता-पिता और उनके विधान वा उपदेश (नः) हमारे (धियः) कर्म एवं बुद्धियों को (प्रचोदयात्) व्यक्तिगत, आध्यात्मिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रिय वा वैश्विक उन्नति के पथ पर अच्छी प्रकार प्रेरित करते हैं।

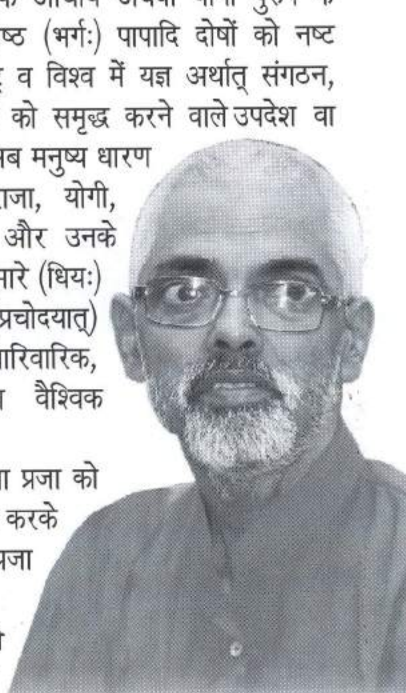

भावार्थ- उत्तम योगी व विज्ञानी माता-पिता, आचार्य एवं राजा अपनी सन्तान, शिष्य वा प्रजा को अपने श्रेष्ठ उपदेश एवं सर्वहितकारी विधान के द्वारा सभी प्रकार के दुःखों, पापों से मुक्त करके उत्तम मार्ग पर चलाते हैं। ऐसे माता-पिता, आचार्य एवं राजा के प्रति सन्तान, शिष्य व प्रजा अति श्रद्धा भाव रखें, जिससे सम्पूर्ण परिवार, राष्ट्र वा विश्व सर्वविध सुखी रह सके।

{वेद मन्त्रों की त्रिविध भाष्य प्रक्रिया पर महर्षिवर देव दयानन्द का मत सर्वविदित ही है। समय न मिल पाने के कारण वे जब वेद-भाष्य ही सम्पूर्ण नहीं कर पाए तो प्रत्येक मन्त्र का त्रिविध भाष्य नहीं कर पाये, यह स्वाभाविक था। वेद-वैज्ञानिक आचार्य जी ने दो वेद मन्त्रों का त्रिविध भाष्य किया है। गायत्री मन्त्र का त्रिविध भाष्य यहाँ प्रस्तुत किया गया है। -संपादक}

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक (वैदिक वैज्ञानिक)
श्री वैदिक स्वस्ति पन्थान्यास, वेद विज्ञान मंदिर
ग्रा.पो.- भागल-भीम, वाया-भीनमाल
जिला- जालौर (राज.)- ३४३०२९

□□□

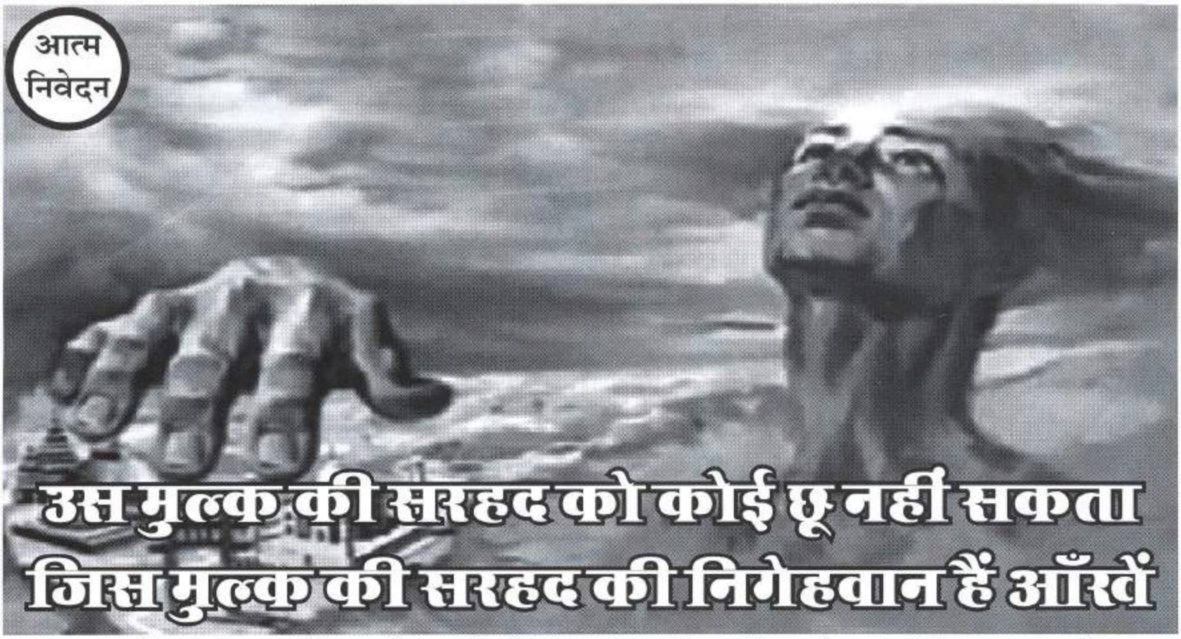

उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता जिस मुल्क की सरहद की निगेहवान हैं आँखें

राज्य का प्राथमिक कर्तव्य क्या है? अपनी प्रजा के जीवन, धन तथा प्रतिष्ठा की बाहरी तथा आतंरिक आक्रमण से सुरक्षा। बाकी तो अपने योगक्षेम का प्रबन्ध तो प्रजा को स्वयं के पुरुषार्थ से करना है। इसका यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि देशवासियों के कल्याण के सन्दर्भ में, उनके स्वास्थ्य, भोजन, शिक्षा आदि से राज्य का कोई सरोकार नहीं है। बिलकुल है। यही राज्य को लोक कल्याणकारी राज्य बनाता है। हमारा आशय केवल इतना है कि आन्तरिक तथा बाह्य आक्रमणों तथा खतरों से देशवासियों को पूर्ण सुरक्षित रखना राज्य की प्राथमिकता है। क्योंकि यह कार्य हम अपने बूते पर करने में सक्षम नहीं हैं। यह कार्य कुछ-कुछ चौकीदार जैसा ही है। चौकीदार क्या करता है? हमारी तथा हमारों की सुरक्षा करता है। हमारी अनुपस्थिति में किसी अवांछित अपरिचित व्यक्ति को हमारे घर में अथवा बिना हमारी अनुमति के हमारे निकट नहीं आने देता और इस प्रकार हमारे जान-माल की संभावित हानि से हमारी रक्षा करता है। और यही सर्वोपरि कार्य है। लोभ, मोह, काम के वशीभूत दुर्दान्त दस्यु हमारे चारों ओर घूम रहे हैं। मौका मिलते ही हमें और हमारों को नुकसान पहुँचाने में तनिक भी विलम्ब नहीं करेंगे। परन्तु देश की चौकीदार व्यवस्था यदि सक्षम है तो उसे मुँह की खानी पड़ेगी और हम और हमारे सुरक्षित रहेंगे। अत्यन्त परिश्रम से अर्जित हमारी संपत्ति सुरक्षित रहेगी। परिवारीजनों की अस्मिता सुरक्षित रहेगी, जीवन सुरक्षित रहेगा। अतः हम बलपूर्वक यह कहना चाहेंगे कि राज्य अन्य लोक कल्याणकारी कार्यों में कितना सफल है यह दोयम दर्जे की बात है प्रथम सुरक्षा चक्र है। जो हमसे सहमत नहीं हैं विचार करें कि राज्य ने आपके लिए रोटी, कपड़ा और मकान का यथेष्ट प्रबन्ध कर दिया है, जीवन में अभाव नहीं है परन्तु एक पल की भी गारंटी नहीं है कि कोई आपका यह वैभव छीनेगा नहीं। आप या आपके बच्चे बाहर जा रहे हैं परन्तु एक पल की भी गारंटी नहीं है कि आप सुरक्षित घर वापस आ सकेंगे। आपकी बिटिया बाहर गयी है परन्तु एक पल की भी गारंटी नहीं है कि उसकी अस्मिता सुरक्षित रहेगी, तब आप निश्चित चाहेंगे कि आपको सशक्त चौकीदार ही चाहिए। धन वैभव दोयम दर्जे पर है।

हमने आन्तरिक संकट की तो बात करली पर साथ ही सीमा पर भी ऐसी ही सम्पूर्ण व्यवस्था भी चाहिए जो आपको बाह्य आक्रमण से पूर्ण सुरक्षित रखे। **सीमा पर के चौकीदार सशक्त हों, समर्थ हों, और दुश्मन में उनका भय व्याप्त हो यह राज्य का प्राथमिक कर्तव्य है, यह कहना समीचीन है।**

किसी भी राष्ट्र में पुलिस, अन्वेषण विभाग, सतर्कता विभाग, गुप्तचर, न्यायालय और सेना और इन सबको शक्ति व गति देने वाली शख्शियत अर्थात् देश का शासक, देश के चौकीदार हैं। ये सब पूर्ण निष्ठा के साथ स्व-कर्तव्य में रत् रहेंगे तो भौतिक समृद्धि के अभाव में भी हम प्रसन्न रहेंगे। यही कारण है कि महर्षि दयानद सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में जहाँ राजधर्म की चर्चा की है वहाँ इन अंगों की योग्यता तथा महत्त्व पर सबसे ज्यादा लिखा है। राजा कैसा हो, मंत्री कैसे हों, गुप्तचर, साक्षी कैसे हों और इनकी सहायता से प्रवर्तित की जाने वाली कठोर व निष्पक्ष दंड नीति और उस

नीति को प्रभावी करने वाले शासक और सेनापति कैसे हों इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। **निष्पक्ष दंडनीति का प्रवर्तन ही राष्ट्र को स्थिर रखता है।** राष्ट्र में सख्त कानून और निष्पक्षता व सख्ती से उसका क्रियान्वयन ही राष्ट्रधर्म का आधार है। **इसीलिए महर्षि मनु ने दण्ड को धर्म कहा है। यही प्रजा के आनन्द का आधार है। पर यह तभी है जब दण्ड का धारण आप्त पुरुष करें।** इसीलिए मनु ने स्पष्ट किया **'जो पवित्र आत्मा सत्याचार और सत्पुरुषों का संगी यथावत् नीतिशास्त्र के अनुकूल चलने वाला श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से युक्त बुद्धिमान है वही न्यायरूपी दंड के चलाने में समर्थ होता है।** क्या विडम्बना है कि आज पूरा विश्व जब आतंकवाद के

खूनी पंजों में जकड़ा है हमारे यहाँ पोटा कानून को हटाया जा रहा है, देशद्रोह के कानून को निरस्त करने हेतु उत्सुकता दिखायी जा रही है। कोई भी मुसीबत आने पर सबसे पहले पुलिस पर ध्यान जाता है। पर समस्या यह है कि कर्तव्य में लापरवाही तथा भ्रष्टाचार के कारण पीड़ित को न्याय से दूर रखने में यह विभाग अच्छा खासा बदनाम है। परन्तु इस विभाग में सभी एक से नहीं हैं। इन्स्पेक्टर मोहन शर्मा जैसे सहस्रों हैं जिन्होंने कर्तव्य-पालन में अपने प्राण तक न्योछावर कर दिए। लेडी सिंघम के नाम से मशहूर करौली की एसपी प्रीति चंद्रा के तेवरों के आगे चंबल के बीहड़ों में डकैत एक के बाद एक सरेंडर कर रहे हैं। बीहड़ और दस्युओं के कारण जिस जिले में कोई एसपी नहीं लगना चाहता, उसी जिले के डांग क्षेत्र में आईपीएस प्रीति चंद्रा महज ढाई माह में सात से ज्यादा दस्यु और डकैतों को गिरफ्तार कर चुकी हैं। अवैध खनन के लिए कुख्यात बीहड़ के जंगलों में डकैतों के खिलाफ चलाए गए हर ऑपरेशन में महिला आइपीएस खुद मोर्चा संभालती हैं। ये तो उदाहरण मात्र हैं। निर्भया के सभी अपराधी ५ दिन में पकड़ लिए गए थे। पुलिस कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार है तो देश में शान्ति ही शान्ति है, हर व्यक्ति सुरक्षित है। भारत की सेना के पराक्रम को तो बारम्बार नमन है। वे सीमा पर रात-दिन जागते हैं हम तभी सो पाते हैं। परन्तु इन चौकीदारों में भी एक वे हैं जो सर्वाधिक खतरे में रहते हुए सेना अथवा पुलिस को वे जानकारी मुहैया कराते हैं जिसके कारण चौकीदारों की भुजाएँ कार्य कर पाती हैं। ये वस्तुतः चौकीदारों की आँखें हैं। एक मूवी का गाना था 'उस मुल्क की सरहद को कोई छू नहीं सकता, जिस मुल्क की सरहद पर निगेहबान हैं आँखें' ये आँखें चौकीदार की हैं। १६७१ के युद्ध की सफलता, हाल की सर्जीकल तथा एयर स्ट्राइक की अद्भुत सफलता की नींव इन्हीं आँखों ने रखी थी तो उरी, पठानकोट तथा पुलवामा की विफलता इन आँखों में दृष्टि दोष अथवा प्रमाद के कारण हुयीं थीं। परन्तु गुप्तचरों की सूचनाएँ रक्षा तथा आक्रमण की सफलता की जान हैं इससे इनकार नहीं किया जा सकता। सभी देशों के गुप्तचर अन्य देशों में कार्यरत रहते हैं यह एक सर्वज्ञात तथ्य है। परन्तु राजनीतिज्ञ अपनी नीति के अनुसार जब सुरक्षा नीति को कमजोर करते हैं तो देश को उसके दुःखद परिणाम भी उठाने पड़ते हैं। 'हिन्दी-चीनी भाई भाई' ने हमें क्या दिया कौन नहीं जानता। पंचशील के आदर्श एकतरफा ही

रहे। जब श्री आई.के. गुजराल प्रधानमंत्री बने तो पड़ौसियों से अच्छे सम्बन्ध बनाने की एकतरफा पहल की और 'गुजराल डोक्टरिन' अस्तित्व में आया। इसके अन्तर्गत उन्होंने भारत की खुफिया एजेंसी 'रॉ' में पाकिस्तान डेस्क को बन्द करवा दिया था, ताकि पाकिस्तान के साथ टकराव कुछ कम हो। टकराव तो क्या कम होना था पाकिस्तान में हमारी आँखें धुंधली हो गयीं अथवा बन्द हो गयीं। अतः दोबारा इस डेस्क को कायम करना अत्यावश्यक था। हमने ऊपर पुलिस बल की चर्चा की। उत्तर प्रदेश पुलिस का ध्येय वाक्य बिलकुल सही रखा गया है-

'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्' जी हाँ, सज्जनों की रक्षा तथा दुष्टों को दण्ड दिलाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका पुलिस की ही है। परन्तु यह बल सज्जनों का विश्वास जीत पाने में पूर्ण सफल नहीं हो पाया है। इसके कई कारण हैं। परन्तु दूसरी ओर श्री अजीत डोवाल जैसे ऑफीसर भी हैं जो एक मिसाल के तौर पर हमारे मध्य हैं। कई बार जासूसी उपन्यास में जिस तरह के नायक दर्शाए जाते हैं और लगता यह है कि वास्तविक जगत् में ऐसे जेम्सबांड अथवा शरलक होम्स नहीं होते हैं, श्री डोवाल ने सिद्ध किया कि असल जिन्दगी में भी ऐसे नायक हैं। पाकिस्तान में ७ वर्ष तक अजीत डोवाल ने गुमनामी की जिन्दगी बिताते हुए एक मुस्लिम के रूप में देश को न जाने कितनी सूचनाएँ भेजी होंगी और आसन्न संकट से अवगत कराया होगा।

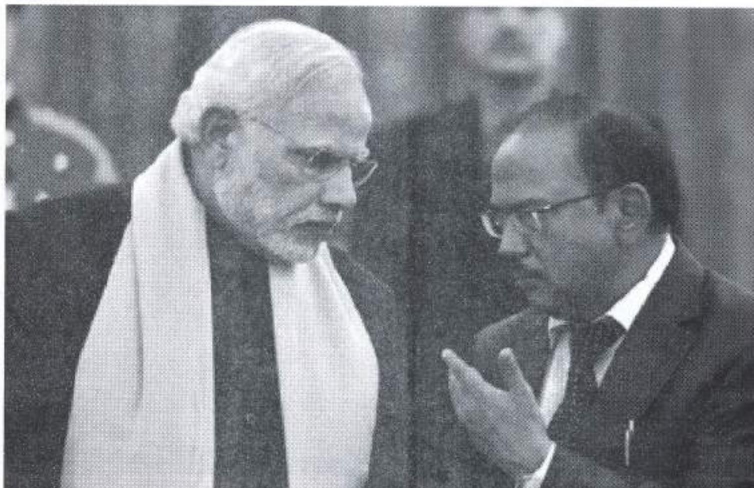

एक पत्रकार यतीश यादव ने डोवाल के बारे में लिखा है कि १९८८ में अमृतसर के बाशिंदों ने स्वर्णमंदिर के आसपास एक रिक्शे वाले को देखा होगा। किसी को नहीं पता था कि वह कौन था, कहाँ से आया था। खालिस्तानी उग्रवादियों ने जब उसपर सन्देह किया तो उसने उन्हें यह कहकर संतुष्ट कर दिया कि वह पाकिस्तान की ISI का एजेंट है जिसे पाकिस्तान ने खालिस्तान मूवमेंट की मदद के लिए भेजा है। ऐसा विश्वास दिलाना कोई आसान काम नहीं था पर डोवाल ने इसे संभव बनाया। उनका विश्वास जीतने के कारण ही संभव हो पाया कि अजीत डोवाल चलती गोलियों के बीच मंदिर के अन्दर बाहर जा रहे थे। यह देशप्रेम और निर्भीकता की पराकाष्ठा थी। ऑपरेशन थंडर बोल्ट से दो दिन पहले डोवाल आतंकवादियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सूचनाएँ यथा उनकी वास्तविक संख्या, उनके हथियार, उनकी मंदिर के अन्दर वास्तविक स्थिति भारतीय अधिकारियों को बता सके। और तभी सुरक्षा बलों को सफलता मिल सकी।

अवकाश प्राप्त कर्नल करन खर्व ने लिखा कि डोवाल की वजह से ही हमें आतंकियों के बारे में सही सूचनाएँ मिल पायीं। उन्हें तब कोई नहीं जानता था। वे इतने दिलेर हैं कि गोलियों की बौछार के बीच भी इधर-उधर जाकर सूचनाएँ भेजते रहे। चलती गोलियों के बीच भी स्वर्ण मंदिर के अन्दर बाहर जाते रहे। प्रवीन स्वामी नामक एक और पत्रकार ने अपनी पुस्तक India Pakistan and the Secret Jihad में यह वर्णन विस्तार से किया है। डोवाल को उनकी बहादुरी के लिए कीर्तिचक्र से नवाजा गया।

जब भारतीय जहाज को आतंकवादी अपहृत करके कंधार ले गए तो उन्होंने यात्रियों की रिहाई के सन्दर्भ में, अकूत धन और भारतीय जेलों में बन्द १०३ आतंकवादियों की रिहाई की माँग की। उन अपहरणकर्त्ताओं से बात करने जो तीन व्यक्तियों की टीम गयी डोवाल उसके सदस्य थे। डोवाल ने अच्छे से वार्ता कर उनकी माँग को तीन आतंकियों की रिहाई तक सीमित कर दिया। तत्कालीन परिस्थितियों में यह भी कम नहीं था।

डोवाल का पाकिस्तान का मिशन सबसे मुश्किल रहा होगा। स्वयं डोवाल ने अपने एक साक्षात्कार में पाकिस्तान के समय का एक किस्सा सुनाया। एक बार जब वे एक मस्जिद से बाहर निकल रहे थे तब एक सफेद दाढी वाले बुजुर्ग ने उन्हें एक ओर बुलाया और एक धमाका सा करते हुए बोला कि तुम हिन्दू हो। डोवाल अन्दर से हिल गए कि क्या आज उनकी असलियत सामने आ गयी है। पर बाहर से निर्विकार रहते हुए बोले नहीं, मैं हिन्दू नहीं हूँ। तब उस बुजुर्ग ने उन्हें अपने साथ आने को कहा। डोवाल के पास उसकी बात मानने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं था। जब वे उस बुजुर्ग के पीछे उसकी कोठरी में पहुँचे तो देखा वहाँ एक मूर्ति रखी हुयी थी। तब इनकी जान में जान आयी कि प्रश्नकर्ता भी हिन्दू था अतः संभावना थी कि वह उनका दुश्मन तो नहीं हो सकता। उस बुजुर्ग ने बताया कि उसके पूरे परिवार को पाकिस्तान में मार डाला गया इसलिए वे मुस्लिम के वेश में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्होंने डोवाल हिन्दू हैं यह इस कारण पहचाना क्योंकि डोवाल के कानों में छेद था जो

कि कर्णविध संस्कार में हिन्दुओं में किया जाता था। उक्त विवरण से आसानी से समझा जा सकता है कि इन लोगों का कार्य कितना खतरनाक होता है। पकड़े गए तो देश आपसे पिंड छुड़ा लेगा, वह कभी स्वीकार नहीं करेगा कि आप उसके अधिकारी हैं। अतः शहीद का दर्जा भी उसे मयस्सर नहीं होगा। गुमनामी की मौत उनका मुकद्दर होगी। ऐसे सभी अधिकारी इस बात से भलीभाँति परिचित हैं पर यह राष्ट्रप्रेम का जज्बा ही है जो उन्हें अपने कदम पीछे नहीं खींचने देता।

पुलिस बल तथा गुप्तचर विभाग का राष्ट्र के अन्दर शान्ति स्थापना में अभूतपूर्व योगदान है। हमने संसद पर हमले के समय, २६/११ के मुम्बई में आतंकवादी वारदात के समय, बटाला हाउस में छिपे आतंकियों को न्यूट्रेलाइज करते समय और अन्य सहस्रों अवसर पर इन लोगों के शौर्य व ईमानदारी का परिचय प्राप्त किया है। एक कहावत है कि बद अच्छा बदनाम बुरा। उसी क्रम में पुलिस विभाग अत्यन्त बदनाम है। और यह कहीं तक सच भी है। पर सच्चाई इसके विपरीत भी है। हमारे जीवन, धन-संपत्ति तथा अस्मिता की रक्षा में अधिकांश पुलिस बल का महत्वपूर्ण योगदान है। अतः भारतीय सेना के साथ हम भारत के पुलिस व गुप्तचर विभाग पर भी गर्व कर सकते हैं।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

□□□

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/१९

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (अष्टम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

म		प्र		य		आ		व	
		हीं			ता				श
न			सू				मे		का

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जब आकाशादि क्रम से प्रलय होती है तो वह प्रलय क्या कहाती है?
२. यह देश देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यों ने यहाँ निवास किया, इससे यह देश क्या कहलाया?
३. क्या आर्यावर्त्त में आर्यों से पूर्व भी कोई निवास करता था?
४. अर्जुन की पत्नी उलोपी कहाँ की राजकन्या थी?
५. मनु के कितने पुत्र थे?
६. क्या पृथ्वी शेषनाग के सिर पर टिकी है?
७. चन्द्रलोक किससे प्रकाशित होता है?
८. जब आर्यावर्त्त में सूर्योदय होता है तब किस जगह सूर्यास्त होता है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१९ का सही उत्तर

१. दुःख २. कार्य ३. कारण ४. सृष्टि
५. महत्तत्व ६. भ्रमजाल ७. नित्य ८. नहीं

''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ जुलाई २०१९

जयन्ती पर विशेष

महाराणा प्रताप

महाराणा प्रतापसिंह भारतीय वीर परम्परा के दीर्घकालीन इतिहास पुरुषों की परम्परा में एक राष्ट्रभक्त और राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाले वीर पुरुष और महान् व्यक्ति थे। उन्होंने तत्कालीन भारत पर मुगल सत्ता के प्रचण्डतम शासक अकबर से लोहा लिया और अपनी मातृभूमि की रक्षा, भारतीय स्वाभिमान, भारतीय स्वातंत्र्य गौरव और आदर्श हिन्दू शासन व्यवस्था की रक्षा के लिए आजीवन जूझने का प्रण लिया और उसका मृत्युपर्यन्त निर्वहन किया। मुगल सम्राट अकबर ने मेवाड़ के अतिरिक्त समस्त भारतीय नरेशों को पराजित अथवा संधि समझौता कर, मनसब और सूबेदारियाँ प्रदान कर अपने अधीन बना लिया था। वस्तुतः मेवाड़ के अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भूखण्ड पर उसका एकछत्र शासन स्थापित हो गया था। **भारतीय गगन मण्डल में केवल मात्र एक ध्रुव तारा प्रतापसिंह ही ऐसा था जो अपनी स्वातंत्र्य आभा से प्रदीप्त था।** अकबर उस आभा को दीप्ति विहीन किए बिना महान् सम्राट कहलाने का गौरव प्राप्त नहीं कर सकता था। यही उत्कट कामना उसे अनवरत बेचैन किए हुए थी। इसलिए वह मेवाड़ और हिन्दू समाज के आशा पुंज प्रतापसिंह को अपनी अधीनता स्वीकार कराने के लिए बार-बार प्रयास करता रहा। उसने पहिले मनसबदारियों का प्रलोभन दिया और मुगल शासन और सेना में उच्च प्रतिष्ठा देने की पेशकश की। उन्हें समझाकर झुकाने के लिए राजा भगवन्तदास और राजा टोडरमल तथा कुमार मानसिंह जैसे उस युग के प्रौढ़ और प्रसिद्ध सेनानायकों को उनके पास भेजा पर प्रतापसिंह ने मुगलों के दासत्व को स्वीकार नहीं किया। जब यह सब प्रयास सफलीभूत नहीं हुए तो उसने रणसिंघा बजाने की सोची और मेवाड़ को सैन्यबल द्वारा अपने अधिकार में करना चाहा। किन्तु साहस के धनी महाराणा प्रतापसिंह अकबर के सैन्यबल से भी भयातुर नहीं हुए और हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् भी आजीवन मुगलों से लोहा लेते रहे। उन्होंने अकबर की विजय की आशाओं पर असफलता का तुषारापात किया और स्वातंत्र्य ज्योति को मेवाड़ की गिरिमालाओं और शृंग शिखरों पर जलाए रखा।

महाराणा प्रतापसिंह के स्वातंत्र्य प्रयासों और उनके संघर्षरत जीवन तथा उच्चादर्शों का सम्यक् मूल्यांकन नहीं किया गया है। यद्यपि उन्होंने उनके दाढ़र्य, वीरत्व, स्वाभिमान और उच्च त्याग, साहस, संकट झेलने की क्षमता की तो विद्वानों ने भूरि-भूरि श्लाघा की है, पर उन्हें हठी स्वभाव का, समयदर्शी विहीन और चातुर्य के अभाववाला तथा राजनीतिज्ञान शून्य पुरुष माना है। कुछ इतिहास लेखकों ने तो इससे भी आगे बढ़कर राष्ट्रीय एकता के लिए बाधक के रूप में भी चित्रित किया है। इस प्रकार उनके महान् त्याग और बलिदान की भावना का मूल्यांकन बन्द आँखों से किया है। कहा नहीं जा सकता कि यदि महाराणा प्रतापसिंह युद्ध के पथ का अनुगमन नहीं करते तो आज भारतवर्ष का जातीय तथा राष्ट्रीय इतिहास कैसा होता? राष्ट्रीय ध्वज में अशोक चक्र होता या मत्स्यचक्र? यह तो कल्पना का विषय है। वस्तुतः महाराणा प्रतापसिंह के संघर्ष का इतिहासवेत्ताओं ने तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और पारम्परिक आदर्शों

और परिस्थितियों के दर्पण में झांक कर समुचित युग स्थिति का अवलोकन करने में भूल की है। उन्होंने राष्ट्रीय एकता के दिवास्वप्न देखने में ही अपनी बुद्धि का प्रयोग किया है।

इस प्रकार महाराणा प्रताप सिंह के आदर्शों, लक्ष्यों, उद्देश्यों और प्रयासों को समझने में भूल की है। कौन कह सकता है कि प्रतापसिंह अकबर की अधीनता स्वीकार कर लेते तो अकबर हिन्दू समाज के प्रति सहिष्णु बना रहता। क्या वह 'दीन् इलाही' धर्म चलाकार सत्, त्रेता और द्वापर युग से प्रवाहित भारतीय आस्थाओं, आदर्शों, श्रद्धा साक्ष्यों के प्रतीकों को अक्षुण्ण रहने देता? ये कुछ प्रश्न हैं जो काल के गर्भ में छिपे हुए ही हैं।

किसी भी राष्ट्र समाज और व्यक्ति समूह पर संकट के मेघ गड़गड़ाने लगते हैं तब देश की नेतृत्वशक्ति देशवासियों को आगत संकट का सामना करने के लिए आह्लादित करती है और देशवासियों को अपने सर्वस्व की आहुति देने के लिए प्रेरित करती है। उस समय के महान् देश के महान् चरित्रों का स्मरण करती है। वे चरित्र जीवित समाज को तंद्रा से जगाते हैं और उन्हें अपने आदर्शों पर मिटने के लिए साहस, शक्ति देते हैं। महाराणा प्रतापसिंह ऐसे ही प्रेरणादायक चरित्र हैं। वे भारतीय मानस के लिए, देश के स्वाभिमान के लिए त्यागमयी परम्पराओं के लिए प्रतीक पुरुष हैं।

महाराणा प्रतापसिंह के देश हितार्थ संघर्षरत जीवन और युद्धों का भारत की सब ही प्रान्तीय भाषाओं के विद्वानों ने एक राष्ट्रवादी स्वातंत्र्यचेता और देश की स्वतंत्रता के लिए जूझने वाले महान् सपूत के रूप में लेखा-जोखा किया है। यह स्वाभाविक ही है कि संकटकाल में संकट से त्राणदायक युक्तियों, साधनों, आदर्शों और मार्ग-दृष्टाओं का स्मरण किया जाता है। इसलिए ब्रिटिशकाल में अंग्रेजों के दास्यबंधन से मुक्ति प्राप्त करने के लिए राष्ट्रीय चरित्र महाराणा प्रतापसिंह, छत्रपति शिवाजी, वीराग्रगण्य दुर्गादास राठौड़ का ही स्मरण किया गया। ये ही हमारी स्वतंत्रता के प्रेरणादायक बने न कि आक्रामक मुगल सम्राट अकबर और बादशाह औरंगजेब। क्योंकि मूलतः वे भारत में रहे और यहीं दफन हुए पर इनकी आस्था मक्का में, मदीना में ही थी। द्वारिका, काशी, अयोध्या और गंगा यमुना के प्रति नहीं थी। इसलिए भारतीय जनमानस के ये प्रेरक नहीं बन सके। जब वर्तमान युग में चीन और भारत, पाकिस्तान और भारत के बीच संघर्ष हुए तो महाराणा प्रतापसिंह और उन जैसे अन्य राष्ट्र पुरुषों से ही देशवासियों ने दिशा प्राप्त की और बोध ग्रहण किया। अतएव निःसंदेह कहा जा सकता है कि महाराणा प्रतापसिंह के युद्ध भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध थे। प्रताप सिंह भारत के राष्ट्र नायक थे। उन्होंने किसी की भूमि छीनने के लिए रक्त नहीं बहाया अपितु अपनी मातृभूमि, पितृभूमि की रक्षा के लिए विपत्ति पथ पर चलने का निर्णय लिया और वे चले।

कोई भी देश दीर्घावधि तक बल प्रयोग से एकता के सूत्र में बांधकर नहीं रखा जा सकता। यह तनिक अवसर उपलब्ध होने पर ताश के पत्तों की भांति बिखर जाता है। बादशाह अकबर की नीतियों को लेकर भारत के इतिहास लेखक ऐसे ही स्वप्न लोक में विचरण करते हैं। रूस का उदाहरण हमारे

कथ्य का साक्षी है। भारतीय अन्य शासकों ने अकबर की अधीनता स्वीकार की तो उनकी भी विवशताएँ थीं। वैयक्तिक परिस्थितियाँ थीं। स्वतंत्रताभिलाषी कोई भी जाति तथा व्यक्ति अकारण किसी की दासता स्वीकार नहीं करता। विकट परिस्थितियाँ उपस्थित होने पर वे ऐसा करने के लिए विवश हुए थे। यदि मुगल सैनिक सेवारत राजपूत शासकों ने प्रसन्नता से या लोभवृत्ति से ऐसा किया होता तो अकबर के दरबार का योद्धा और कवि वीरवर महाराज पृथ्वीराज राठौड़ महाराणा को 'पटकूं मूंछा पाण कै पटकूं निज तन करद' जैसे स्व-गौरव को जागृत करने वाला काव्यपत्र क्यों लिखता? यही नहीं अलबदायूंनी ने लिखा है कि हल्दीघाटी के बाद मेवाड़ की जनता व अन्य क्षेत्रों की जनता ने मुगलों के इस कथन को स्वीकार तक न किया कि महाराणा हार गया और बादशाह जीता है। जनता का यह विश्वास ही मुगल सत्ता के प्रति विरोध व्यक्त करता है। पशु-पक्षी तक प्रथम प्रथम तो बन्धन मुक्त होने के लिए हाथ पैर मारते ही हैं फिर मानव कैसे बन्धन स्वीकार कर सकता है।

एतदर्थ हमें स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए कि **महाराणा प्रतापसिंह भारतीय राष्ट्र के देशभक्त सच्चे नेता ही नहीं थे, बल्कि उनके युद्ध-प्रयास राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रयास थे।** अन्यथा हम उस आदर्श महामानव के प्रति अपने इतिहास की अज्ञानता का ही परिचय देंगे।

- देवी सिंह मंडावा (इतिहासकार)

साभार- स्वतंत्रता के पुजारी महाराणा प्रताप

❑❑❑

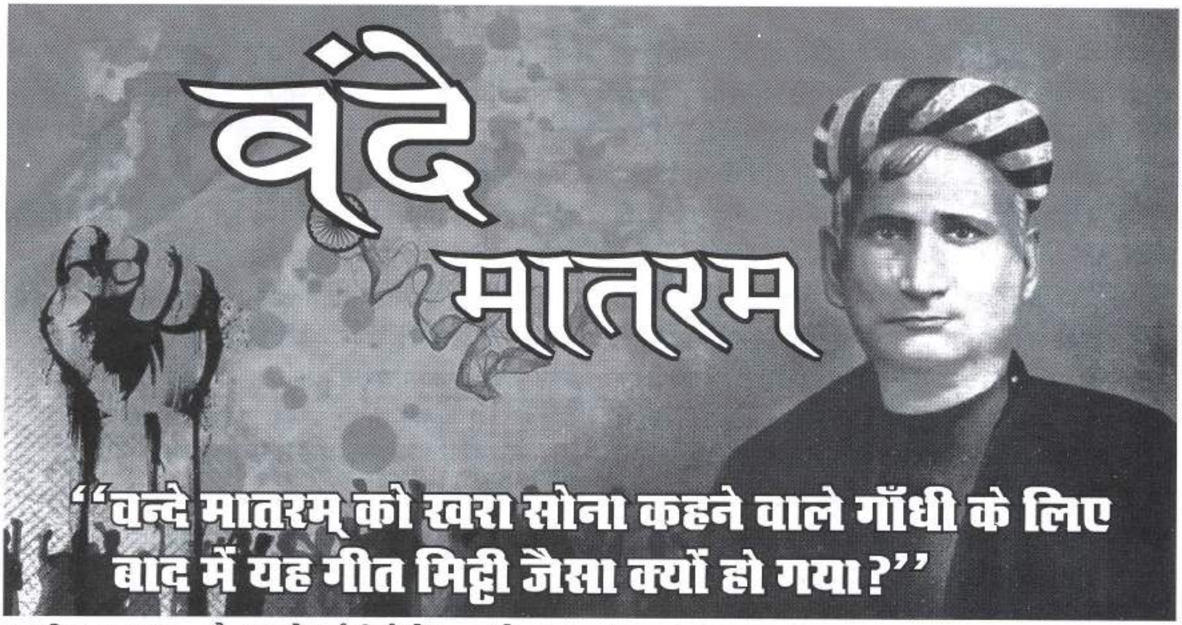

वंदे मातरम

"वन्दे मातरम् को खरा सोना कहने वाले गाँधी के लिए बाद में यह गीत मिट्टी जैसा क्यों हो गया?"

यह किस्सा १७७० और इसके इर्द-गिर्द के वक्त को याद करते हुए लिखा गया था। बंगाल में भारी अकाल के हालात थे। उस जमाने में बंगाल की हुकूमत निष्ठुर हो चुके मुस्लिम नवाबों और ईस्ट-इण्डिया कम्पनी के गठबंधन पर टिकी थी। इसका विरोध करते हुए वहां के संन्यासियों ने एक आन्दोलन खड़ा कर दिया।

महेंद्र सिंह अपनी पत्नी और बेटी के साथ गांव छोड़कर शहर के लिए चलता है, लेकिन रास्ते में उनसे बिछड़ जाता है। अंग्रेज सिपाही उसे लुटेरा समझ एक संन्यासी भावानन्द के साथ पकड़ लेते हैं। लेकिन भावानंद के सहयोगियों की मदद से दोनों जल्द ही मुक्त हो जाते हैं। अब भावानंद आगे-आगे चल रहे हैं और महेंद्र सिंह उनके पीछे। चाँदनी रात में भावानन्द गाना शुरु करते हैं,

'वंदे मातरम्!
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्यश्यामलां मातरम्...'

वंदे मातरम् का सबसे पहला जिक्र बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित उपन्यास 'आनोंदोमोठ' या 'आनंदमठ' में इसी जगह मिलता है। हालांकि बताया जाता है कि इस गीत के पहले दो छन्द उन्होंने १८७२ से १८७५ के बीच ही लिख लिए थे। लेकिन इन्हें सबसे पहले १८८१ में आनंदमठ के हिस्से के तौर पर ही प्रकाशित किया गया था। यह गीत आगे चलकर राष्ट्रवादी आंदोलनों का प्राण मंत्र बन गया। वंदेमातरम् जैसी अद्‌भुत रचना के लिए क्रांतिकारी अरविंद घोष ने बंकिम चंद्र चटर्जी को 'राष्ट्रवाद का ऋषि' जैसी उपमा दी थी।

जब वंदे मातरम् छात्र, मजदूर और क्रांतिकारियों तीनों की जुबान पर चढ़ गया।

अपनी किताब 'वंदे मातरम्- एक गीत की जीवनी' में सव्यसाची भट्टाचार्य लिखते हैं, '१६०५ तक वंदे मातरम् राष्ट्रवादियों के लिए नारा बन चुका था। अनेक राष्ट्रवादी क्रांतिकारी खुद इसे अपना मंत्र बताते थे।' बताते हैं कि १६०७ में ढाका मजिस्ट्रेट ने एक रिपोर्ट तैयार की थी। इसमें लिखा था, 'वंदे मातरम् पूर्वी बंगाल में सक्रिय क्रांतिकारी संगठनों का प्रमुख नारा था। हालांकि कभी-कभी ये लोग भारत माता की जय भी बोलते थे, लेकिन संगठन का सदस्य बनने के लिए किसी भी नवआगंतुक को वंदे मातरम् की ही

शपथ लेनी पड़ती थी।'

जिक्र मिलता है कि जब विद्रोही लेखन और एक बमकांड के आरोप में अरविंद घोष पर मुकदमा चला तो वे और उनके कई साथी अदालत में वंदे मातरम् का घोष करते थे। क्रांतिकारी खुदीराम बोस को जब १६०८ में एक जज की

हत्या करने की कोशिश के जुर्म में फांसी की सजा मिली थी तो उन्होंने अपने बयान की शुरुआत वंदे मातरम् से ही की थी। ऐसे ही एक और क्रांतिकारी प्रद्योत भट्टाचार्य को १६३२ में एक जज के कत्ल के आरोप में फांसी दी गयी तो उन्होंने भी अपने आखिरी संदेश का समापन वंदे मातरम् से ही किया था।

यह वह दौर था जब क्रांतिकारी ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों और मजदूरों के दिलों में पल रहा आक्रोश भी वंदे मातरम् के उद्घोष के रूप में परवान चढ़ने लगा था।१६०५ में कलकत्ता के पास बनी एक मिल में मजदूरों की हड़ताल हुई। विरोध के दौरान वंदे मातरम् का नारा लगाते दो मजदूरों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। यह बात वहाँ काम करने वाले नौ हजार से भी ज्यादा मजदूरों को इतनी नागवार गुजरी कि उन्होंने उसी शाम मिल के सामने इकट्ठे होकर वंदे मातरम् का नारा लगाया।

दूसरी तरफ छात्र आंदोलनों में भी वंदे मातरम् का नारा युवा खून में उबाल ला रहा था। इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने गरम दल के प्रमुख नेता विपिन चंद्र पाल को जिम्मेदार ठहराया। अप्रैल १६०७ में मद्रास प्रेसिडेंसी के एक कॉलेज में वंदे मातरम् कहने के जुर्म में कुछ छात्रों की गिरफ्तारी हुई। इसके विरोध में विपिन चंद्र वहाँ पहुँचे और छात्रों को संबोधित किया। प्रभावित होकर संस्थान के अधिकतर विद्यार्थियों ने प्रशासन के खिलाफ बगावत कर दी। वहाँ के जनशिक्षा विभाग के निदेशक का कहना था कि यदि विपिन चंद्र छात्रों के नाजुक मन पर अपना प्रभाव नहीं डालते तो हालात काबू में आ जाते।

मुस्लिम लीग और वंदेमातरम् का विरोध

जहाँ एक तरफ वंदे मातरम् का उद्घोष पूरे देश में क्रांति का

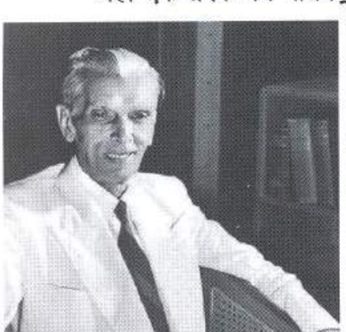

सैलाब तैयार कर रहा था, वहीं मुस्लिम लीग इस नारे के कड़े विरोध में थी। लीग का कहना था कि आनन्द मठ की विषय-वस्तु मुस्लिम विरोधी है। हालांकि आनन्द मठ का कथानक हिन्दू-मुस्लिम के आपसी बैर से कहीं ज्यादा शोषक के प्रति शोषित के आक्रोश के इर्द-गिर्द बुना गया था। और उसमें भी खासतौर पर वंदेमातरम् का विशेष हिस्सा जिसे राष्ट्रगान के तौर पर अपनाए जाने की बात चल रही थी, आपसी वैमनस्य से कहीं दूर था। लेकिन इस बात को दरकिनार करते हुए कट्टर मुस्लिम संगठनों ने इस बात को बड़ा मुद्दा बना लिया था।

सव्यसाची अपनी किताब में एक जगह जिक्र करते हैं कि मुस्लिम प्रेस की राय के मुताबिक बंकिम मुसलमानों से नफरत करते थे और उन्होंने अपनी घनघोर सांप्रदायिक घृणा के कारण एक बड़े समुदाय को हमेशा के लिए अलग-थलग कर दिया। सव्यसाची के मुताबिक उस दौर की मुस्लिम प्रेस का यह भी मानना था कि बंकिम चंद्र चटर्जी की रचनाओं में मुसलमानों को कलंकित किया गया है। इसका असर यह हुआ कि मध्यमवर्गीय मुसलमानों के जहन में उनके लिए नफरत बढ़ती चली गयी। बंकिम को मुस्लिम विरोधी साबित करने के लिए बार-बार उनके साहित्य के उन्हीं हिस्सों को सामने लाया जाने लगा जो आपत्तिजनक थे।

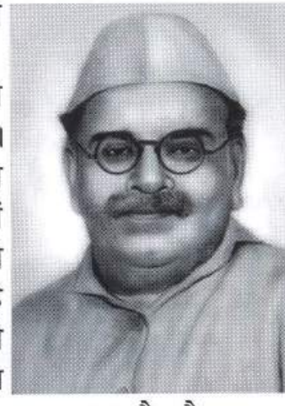

लेकिन बुद्धिजीवी मुसलमान लीग की इस बात से इत्तेफाक नहीं रखते थे। उन्हें लगता था कि इस सारी साजिश के पीछे अंग्रेजों का हाथ है जो दोनों मजहबों के बीच दीवार खींचना चाहते थे। उस जमाने में (१६३८) एक बड़े कांग्रेसी नेता रफी अहमद किदवई ने कहा था, 'वंदे मातरम् वर्षों से कांग्रेस के अधिवेशन की शुरुआत में गाया जाता रहा है और मुसलमानों ने इसका विरोध महज १६३० से करना शुरू किया है।' उनके द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में आगे कहा गया था, 'जनाब जिन्ना ने कांग्रेस इसलिए नहीं छोड़ी थी कि वंदे मातरम् गीत इस्लाम विरोधी है बल्कि उनके कांग्रेस छोड़ने के पीछे कारण यह था कि उन्हें स्वराज की अवधारणा स्वीकार नहीं थी।'

१६३० के दशक में बंगाल के नामी लेखक रीजाउल करीम ने वंदे मातरम् और आनंदमठ की समीक्षा करते हुए लिखा था कि इस (वंदे मातरम्) मुद्दे पर अंग्रेजों की शह पर मुस्लिम लीग जो कर रही थी उसका मुख्य कारण था मुसलमानों को स्वतंत्रता संग्राम से बाहर निकालना और इस तरह आजादी के आंदोलन की एकता पर चोट करना। उन्होंने लिखा, **'इस गीत ने गूंगों को जबान और कलेजे के कमजोर लोगों को साहस दिया...** और इस रूप में बंकिमचंद्र ने देशवासियों को एक चिरकालिक उपहार दिया था। बहुत से लोगों ने उन्हें

(बंकिम) सांप्रदायिक अथवा मुस्लिम विरोधी बताया है, लेकिन बंकिम के व्यक्तित्व के जिस अंश को मुस्लिम विरोधी बताया जाता है, वह मेरे जानते उनकी अपनी पहचान नहीं है। यह उनके युग का चित्र है। वे जिस समय में रह रहे थे, उसका चित्र है और इस बात के लिए एक लेखक को माफ कर देना चाहिए। दूसरी बात, यदि बंकिमचंद्र मुस्लिम विरोधी थे तो क्या इससे उनका साहित्यिक महत्व कम हो जाता है?'

रवींद्रनाथ टैगोर, जवाहर लाल नेहरू और महात्मा गाँधी की इस गीत के प्रति राय-

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि वंदे मातरम् लिखा भले ही बंकिम चंद्र ने था, लेकिन इसे सबसे पहले गाने वाले जन-गण-मन के रचियता रवींद्रनाथ टैगोर थे। बताया जाता है कि टैगोर ने इस गीत के पहले अंतरे को १८९६ के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता वाले अधिवेशन में अपने स्वर दिए थे और वे इसे अपना सौभाग्य मानते थे। इस बात का जिक्र रवींद्रनाथ टैगोर ने १९३७ में जवाहर लाल नेहरू को लिखे एक पत्र में किया है। यह पत्र उन्होंने वंदे मातरम् पर मुस्लिम लीग के कड़े विरोध के चलते नेहरू द्वारा उनके विचार पूछने पर लिखा था।

इस पत्र में टैगोर ने लिखा, 'मैं गीत के पहले दो अंतरे पूरी

तरह स्वीकार करने के पक्ष में हूँ... **होनहार युवकों के विस्मयकारी बलिदान से जुड़कर यह गीत राष्ट्रीय गीत में बदल गया है...** मैं इस बात को मुक्तभाव से स्वीकार करता हूं कि बंकिम की पूरी वंदे मातरम् कविता अगर अपने संदर्भ के साथ पढ़ी जाए, तो इसकी व्याख्या इस तरह से हो सकती है कि उससे मुसलमानों की भावनाओं को चोट पहुँचे, लेकिन इसी कविता के स्वतः स्फूर्त भाव से निकला हुआ राष्ट्रीय गीत जिसमें मूल कविता के दो अंतरे भर हैं, हमें हमेशा पूरी कविता की याद नहीं दिलाता और उस कथा की याद तो शायद ही आती है, जिसका इसके साथ आकस्मिक रूप से जुड़ाव हो गया। इस कविता ने अलग से अपनी निजता तथा प्रेरणाप्रद महत्व प्राप्त कर लिया है जिससे मुझे नहीं लगता कि किसी संप्रदाय या समुदाय को चोट पहुँचती हो।'

इस पत्र का जिक्र करते हुए सव्यसाची भट्टाचार्य लिखते हैं कि टैगोर ने कविता के निजी अर्थ और उपन्यास के संदर्भ के बीच पैदा होने वाले अर्थ के बीच अंतर किया। कोई रचना लोगों की कल्पना में जो महत्व इख्तियार करती है और मूल संदर्भ में उसका जो महत्व होता है, टैगोर ने इसके बीच भी भेद किया। जाहिर था इस पत्र के बाद जवाहर लाल नेहरू की दुविधा कम हुई और इस गीत को लेकर जो निर्णायक समिति बनी उसका प्रस्ताव खुद नेहरू ने तैयार किया।

नेहरू ने लिखा, 'वंदे मातरम् शक्ति का नारा बन गया है जिससे हमारी जनता को प्रेरणा मिलती है। यह अभिवादन का मुहावरा बन गया है जो हमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के अपने संघर्ष की याद दिलाता है... गीत के दो अंतरे धीरे-धीरे (बंगाल से) शेष प्रान्तों में फैल गए और इनके साथ एक राष्ट्रीय महत्व जुड़ गया। गीत का बाकी हिस्सा कभी-कभार ही उपयोग में आता है... इन दो अंतरों में भावपूर्ण भाषा में मातृभूमि के सौंदर्य तथा उसके वैभव का वर्णन किया गया है. .. यह गीत किसी समूह अथवा समुदाय को चुनौती देने के लिए हिंदुस्तान में कभी नहीं गाया गया, न ही इसको इस रूप में देखा गया अथवा माना गया कि इससे किसी समुदाय की भावनाओं को चोट पहुँचेगी...कांग्रेस ने कभी भी इस गीत को अथवा किसी दूसरे गीत को भारत के राष्ट्र गान के रूप में स्वीकार नहीं किया, लेकिन गीत की लोकप्रियता के कारण उसे विशेष तथा राष्ट्रीय महत्व हासिल हो गया...'

नेहरू ही नहीं बल्कि महात्मा गाँधी भी इस गीत के बारे में लगभग वही सोच रहे थे जैसा टैगोर ने लिखा था। १९१५ में मद्रास की एक सभा में गाँधी उपस्थित थे जिसकी शुरुआत वंदे मातरम् के साथ हुई। तब इस गीत से प्रभावित हुए गाँधी ने कहा था, 'आपने जो सुन्दर गीत गाया उसे सुनकर हम सब एकदम उछल पड़े। कवि ने मातृभूमि की व्यंजना के लिए हर संभव विशेषणों का प्रयोग किया है। अब यह हम-आप पर है कि कवि ने मातृभूमि के बारे में जो कहा है उसे साकार करने की कोशिश करें।'

लेकिन अगले ३० साल में हालात बिगड़ते गए। जहाँ मुस्लिम लीग इस गीत का जमकर विरोध कर रही थी, वहीं कुछ अतिवादी हिंदू, मुसलमानों के खिलाफ वंदे मातरम् का आपत्तिजनक इस्तेमाल करने लगे थे। इसे देखते हुए जुलाई १९३९ में गाँधी ने अपने अखबार 'हरिजन' में एक लेख लिखा। इसमें उन्होंने कहा, 'वंदे मातरम् एक शक्तिशाली युद्धघोष है और मैं अपनी नौजवानी के दिनों में इस गीत से

अभिभूत था... मुझे कभी नहीं लगा कि यह एक हिंदू गीत है अथवा इसे सिर्फ हिंदुओं के लिए रचा गया है। दुर्भाग्य से हम अब दुर्दिन में जी रहे हैं। सारा तपा-तपाया खरा सोना आजकल मिट्टी सा हो गया है। ऐसे समय में बुद्धिमानी यही है कि इसे खरे सोने के भाव नहीं मिट्टी के ही मोल बेचा जाए। किसी मिली-जुली सभा में वंदे मातरम् को गाने के सवाल पर मैं तनिक भी झगड़ा मोल नहीं लेना चाहता... यह गीत कभी निस्पंद नहीं हो सकता। यह करोड़ों के हृदय में अंकित हो चुका है।'

गाँधी जानते थे कि वंदे मातरम् का चाहे जितना विरोध हो जाए लेकिन राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रमुख गवाह और हिस्सेदार रहा यह गीत भारतीय समाज के जेहन में सदा-सदा के लिए अमर हो चुका था। इस गीत की सर्वकालिक व्यापकता ही थी कि इसे रचे जाने के करीब १२५ वर्ष बाद २००२ में बीबीसी वर्ल्ड सर्विस के एक सर्वे में उसके २५००० श्रोताओं ने वंदे मातरम् को हिन्दुस्तान के दो मशहूर गीतों में से एक माना।

{विकीपिडीया के अनुसार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में २४ जनवरी १९५० को 'वन्देमातरम्' को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाने सम्बन्धी वक्तव्य पढ़ा जिसे स्वीकार कर लिया गया। इससे पूर्व १९०५ में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में इस गीत को राष्ट्रगीत का दर्जा प्रदान किया गया। -संपादक}

❑❑❑

साभार- सत्याग्रह

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य — मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग — कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया — उपमंत्री-न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्यांमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

वेद, वैदिक और भारतीय ज्योतिष साहित्य में पृथ्वी

प्रस्तुत लेख में ब्रह्माण्ड में अनेक पृथिवियों, पृथ्वी के गोल होने, पृथ्वी की गति, ऊपरी आवरण और गर्भ, आकर्षण-शक्ति, मूल तथा पृथ्वी पर समुद्र और हिन्दुओं के विभिन्न ग्रन्थों (शास्त्रों) में वर्णित वनस्पति के विषय में लेखन का प्रयास किया गया है।

अथर्ववेद (८/६/१) में **'कतमस्या पृथिव्याः'** में हमें इस विराट नभोमण्डल में उक्त छन्दांश से ज्ञात होता है कि ब्रह्माण्ड में अनेक पृथ्वीलोक हैं। साथ ही यह भी कहा गया है कि **'कालोऽ मूं दिवमजनयत्काल इमाः पृथिवीरुत'** और काल ने इस ब्रह्माण्ड के सूर्य और टिमटिमाते तारों के विधान ने इन्हें जन्म दिया है। **यहाँ यह स्पष्ट है कि इस ब्रह्माण्ड में अनेक पृथ्वीलोक हैं।** अथर्ववेद (२०/८१/१ तथा १३/२० में तथा ऋग्वेद (८/७०/५) में यही तथ्य दुहराया गया है। इससे यह सिद्ध होता है कि जिस पृथ्वी पर हम निवास कर रहे हैं वही नहीं इस नभमंडल में ऐसी अनेक पृथिवियाँ हैं।

पृथ्वी गोल है-

दूसरी जानकारी जो हमें मिलती है वह है कि पृथ्वी गोलाकार है। हमें जो सूर्य, ग्रह, नक्षत्र इस नभमण्डल में दिखाई दे रहे हैं वे सभी गोल आकृति के हैं- अतः यह पृथ्वी जिस पर हम रह रहे हैं, भी गोलाकार ही होनी चाहिए। आर्य मनीषियों ने इस तथ्य को बहुत पहले ही जान लिया था अतः ज्योतिष विज्ञान के ग्रन्थ पंच सिद्धान्तिका में इस रहस्य का लेखन बहुत पहले ही कर लिया था। पंच सिद्धान्तिका में कहा गया है कि-

पञ्च महाभूत मयस्तारागणः पञ्जरे महीगोलः।
खऽयस्कान्तः स्थोलोह इवास्थितो वृत।। - त्रैलोक्य सिद्धान्त १३/१

पृथ्वी का यह गोलक, शून्य, वायु, जल और पृथ्वी इन पाँचों तत्वों से निर्मित है। इन तत्वों से निर्मित यह गोलक लोह सन्दूक के समान चारों ओर से चुम्बक के समान बना है। अतः भारतीय मनीषियों ने यह ज्ञान अर्जित कर लिया था कि सभी ग्रह गोलकों के आधार पर यह ब्रह्माण्ड भी गोलाकार है। यह ब्रह्माण्ड दो अर्ध गोलकों में विभाजित है। कोलम्बस की यात्रा के उपरान्त ही यूरोपीय विद्वान् इस तथ्य से परिचित हो सके थे।

ऋग्वेद (१/९२/१) में कहा गया है कि यह पृथ्वी गोल है- **'एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे.... भानुमंजते'** अर्थात् जो उषायें (या उषा रश्मियाँ) अरुण वर्ण (लाल रंग) के प्रकाश का क्षेपण करती हैं, तब ये पृथ्वी के पूर्वी आधे भाग और ग्रहों का निर्माण करती हैं। प्रकाश शब्द से यहाँ दिन के प्रकाश से अर्थ है। ऐसा तभी संभव होता है जब पृथ्वी गोल हो। वेद में यहाँ स्पष्ट रूप से पृथ्वी की आकृति गोल कही है। आर्य भट्ट नाम के ज्योतिषी ने भी उपर्युक्त कथन की शिक्षा दी है। उसने अपने ग्रन्थ में कहा है-

भूग्रहमाना गोलार्धानि स्वछाययानि वर्णानि।
अर्धानि यथा सारं सूर्याभिमुखानि दीव्यते।। - आर्यभट्ट ४/५

यह पृथ्वी गोल है अतः प्रत्येक मनुष्य स्वयं यह सोचता है कि वह स्वयं ऊपर की ओर है और पृथ्वी के दूसरी ओर का भाग मानो उसके अधीन है। वास्तविकता यह है कि पृथ्वी गोल होने से उसमें न तो कोई ऊपर है और न नीचे ही। पृथ्वी का व्यापन (व्यास) सूर्य सिद्धान्त के अनुसार १६०० योजन है जो एक योजन चार कोशों के हिसाब से ६४०० कोश होता है। एक कोश सवा मील का होने से पृथ्वी का कुल व्यास ८००० मील होता है।

पृथ्वी का व्यास ८००० मील होने से और इसकी परिधि २५०० मील होने से विद्यमानता दृढ़ होनी चाहिए कि क्या है वह जो हम सोचते हैं? पृथ्वी अपनी धुरी पर (कीली पर) चक्कर लगाती है यह सही है पर इसके लिए कुछ अवरोध है या आधार हैं जो इसको दूर नहीं जाने देता। इस विषय में

वेद के मंत्र में हमें इसके आधार के विषय में जानकारी देते हैं- यथा-

आधारयत्पृथिवीं विश्वधायसमस्तभ्नान्मायया द्यामवस्त्रस:।।

- ऋग्वेद २/१७/५

अर्थात् सूर्य पृथ्वी को नियंत्रित रखता है। इन्द्र (सूर्य) ने पृथ्वी को पकड़ रखा है जो समस्त संसार (निर्माण) को संलग्न ब्रह्माण्ड के साथ विराम देता है। अथर्ववेद भी यही कहता है कि समस्त विश्व (पृथ्वी सहित) सूर्य (अनड्वान) पर आश्रित है। सूर्य समस्त सृष्टि और आकाशीय दिशा में सूर्य के द्वारा संयोजित (संचालित) है।

दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखै:। - ऋग्वेद ७/९९/३, यजुर्वेद ५/१६

ऋग्वेद आगे और कहता है कि-

'सविता यन्त्रै: पृथिवीमरम्णादस्कम्भने। - ऋग्वेद १०/१४९/१

अर्थात् सूर्य ने इस पृथ्वी को अपनी रश्मियों से नभ में बिना किसी की सहायता के पकड़ रखा है। इसकी परिधि ने इस पृथ्वी को गोल (या नभ) में लटका रखा है।

पृथ्वी का परिभ्रमण

सभी ग्रहों का घूर्णन नहीं होते हुए भी वे चक्कर लगाते हैं। ये सभी आकाशीय पिण्डों के तीन केन्द्र हैं। अत: प्रत्येक गोलक के तीन तरह का घूर्णन होता है।

(**प्रधयश्च क्रमेकं त्रीणि नभ्यानि**) वे केन्द्र हैं।

१. पदार्थ (धातु) केन्द्रों पर पश्चिम से पूर्व की ओर

२. सूर्य के चारों ओर

३. इसके ध्रुव के साथ केन्द्र के रूप में भ्रमण करता है।

अक्ष गति या अक्ष चलन में तीन प्रकार के घूर्णन को हम सुगमता से नभ में ग्रह नक्षत्रों को देख सकते हैं पर हम यह नहीं देख सकते कि हमारे निवास स्थान युक्त यह पृथ्वी घूम रही है फिर भी यह पृथ्वी भी घूर्णाती (चक्कर लगाती) है। यह पृथ्वी अपनी धुरी पर प्रतिदिन घूमती रहती है।

येषाम न्येषु पृथ्वी जुजर्वा इव विशपति भिया यामेषु रेजते।

यह पृथ्वी गैसों, और तूफानों में आठों प्रहर किसी बूढ़े आदमी की तरह अपने पुत्रों और पौत्रों के साथ समान रूप से कमर झुकाये और काँपते पाँवों से अपने चारों ओर अपने ही मार्ग पर घूमती है। इस मंत्र में यह स्पष्ट होता है कि पृथ्वी भ्रमण करती है। वेद में इसके लिए 'रेजते' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसके साथ तीन और भी महत्वपूर्ण बातें कही गई हैं-

पृथ्वी गैसों (तूफानों) के द्वारा भ्रमंण करती है। जिस तरह कोई वस्तु पानी में तैरती है और उसी समय पानी का बहाव और उस बहती हुई वस्तु का बहाव एकसा होता है। यही कारण है कि दिनभर घूम-फिर कर रात को पक्षी अपने घोंसलों में बिना किसी परेशानी के आ जाते हैं।

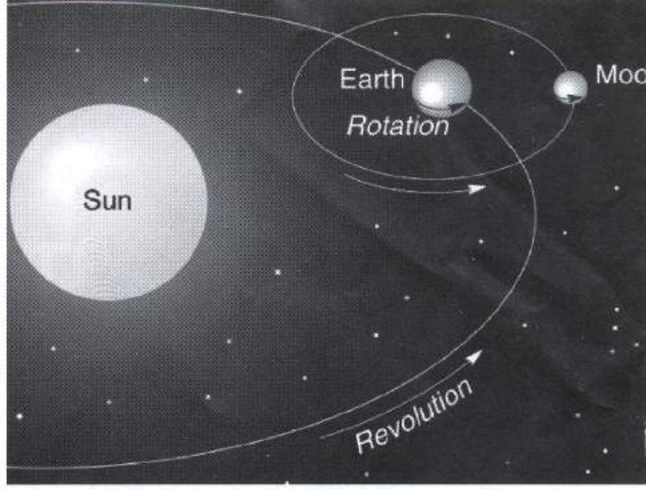

ये गैसें मारुत कही गई हैं। ये सात परतों में होती हैं जिनमें प्रत्येक में सात मारुत (गैसें) होती हैं। सब मिलाकर उनचास मारुत होते हैं। एक मारुत सात कोशों तक के वातावरण में फैला होता है। इस प्रकार पृथ्वी के चारों ओर सात गण उनचास (४९) योजन में होते हैं। इस प्रकार इस पृथ्वी की आकर्षण शक्ति २३९ मील तक उसके आवरण में प्रभावित होती है। इस प्रकार प्रत्येक मारुत के आकर्षण का अपना प्रभाव एक योजन (५ मील) तक होता है। यही कारण है कि कोई भी पर्वत पाँच मील से ऊँचा नहीं हो सकता है।

दूसरी बात जो कही गई है वह है पृथ्वी किसी बूढ़े आदमी के समान अपने पुत्र और पौत्रों के साथ काँपते हुए चलती है। अर्थात् वह सीधे मार्ग पर भ्रमण नहीं करती। यदि वह सीधे मार्ग पर भ्रमण करती होती तो बिना किसी लड़खड़ाहट के पृथ्वी पर रात और दिन का समय बराबर होता।

तीसरी बात यह है कि यह पृथ्वी याम या प्रहरों में भ्रमण करती है। दिन और रात में आठ याम या प्रहर होते हैं। अत: पृथ्वी अपनी कीली पर २३ घंटे ५६ मिनट और ४ सैकण्ड में भ्रमण करती है। इसके प्रतिदिन के भ्रमण बराबर होते हैं।

अहोरात्रे पृथिवी नो दुहाताम्। - अथर्ववेद १२/१/३६

वायु की गैसों का प्रवाह पृथ्वी को भ्रमण कराता है। यह स्पष्टत: वात सूत्र. और सूर्य सिद्धान्त के परिधि मण्डन को वर्णित करता है। वहाँ वायु का प्रवाह और रश्मियों का विवरण भ्रमण के कारण और सभी ग्रहों के भ्रमण में वर्णित किया गया है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर भ्रमण करती है। आर्यभट्ट कहते हैं कि जिस प्रकार नाव में सवारी करते व्यक्ति वृक्षों और अन्य वस्तुओं को, जो नदी के किनारे पर स्थित होते हैं को दूसरी ओर विपरीत दिशा में चलते हुए देखते हैं उसी प्रकार भ्रमण करती हुई पृथ्वी पर रहते हुए व्यक्ति स्थित नक्षत्रों को ऐसे

देखते हैं जैसे वे पश्चिम की ओर दौड़ रहे हैं।

जैसाकि कहा गया है कि सूर्यदेव पृथ्वी की पूर्व दिशा का कारण है, यह भी दिखाता है कि पृथ्वी अपनी धुरी पर पूर्व की ओर भ्रमण करती है।

पृथ्वी का सूर्य के साथ अपने केन्द्र के समान भ्रमण करना– अथर्ववेद ३/८/१ के अनुसार सूर्य पृथ्वी को विस्तर के समान समेट कर भ्रमण कर रहा है और अपनी रश्मियों से उन्हें आने वाली विभिन्न ऋतुओं को प्रदान करता है। यहाँ यह स्पष्ट है कि सूर्य अपनी रश्मियों के साथ पृथ्वी को भ्रमण कराता है और इसे ऋतुओं के साथ कर देता है यह पृथ्वी का वार्षिक परिभ्रमण ऋतुओं के परिभ्रमण के कारण है।

अथर्ववेद में कहा गया है कि ग्रीष्मऋतु आदि पृथ्वी की ऋतु से वार्षिक भ्रमण के कारण होती हैं।

पृथ्वी के तीसरे प्रकार का भ्रमण उसके ध्रुव के धुरी के केन्द्र के साथ होता है। यह २५६२० वर्ष पूर्ण भ्रमण कर लेता है। विष्णु चन्द्र कहते हैं कि वह २१००० वर्षों से अधिक समय लेता है।

पृथ्वी का आवरण और पृथ्वी

वेद के अनुसार उसके विभाग, वस्तुएँ, परतें आदि महाद्वीप, परते आदि होते हैं। अथर्ववेद (१२/१/११) में कहा है- पृथ्वी वभ्रू (भूरे) रंग की, गहन (काले) रंग की, आरक्त (लाल) रंग की है और ये सभी रंग चमकीले श्वेत रंग के होते हैं ये सभी चार रंगों के अतिरिक्त, अधिक भी पृथ्वी के प्रायः सभी भागों में पाये जाते हैं। वेद में इसी कारण कहा गया है कि पृथ्वी अनेक आकृतियों वाली है। अथर्ववेद १२/१/२ के अनुसार यह 'भूरिवर्णस्' अर्थात् यह पृथ्वी अनेक रंगों वाली है। अथर्ववेद १२/१/२ के अनुसार यह पृथ्वी सपाट न होकर ऊँची, ऊँडी (गहरी) या अधिक सपाट है। यह बताता है कि पृथ्वी का आवरण सपाट (समतल) नहीं है पर इसके ऊँचे और नीचे भाग भी होते हैं अधिकांशतः यह समतल है। इसका उच्चतम भाग पहाड़ की चोटियों और निम्नतम भाग समुद्र तल भाग है। उनके बीच में यह समतल होती है। इसकी समतलीय भूमि तीन तरह की होती है। वे हैं-

गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवी स्योनमस्तु।

– अथर्व १२/१/११

पठार, पहाड़ियों और बर्फ से आवृत्त पर्वत। निम्नस्थ पृथिवियों, झीलें, ताल और समुद्र हैं।

भू प्रदेश विभाग

तीन परतों वाली भूमि स्वाभाविक रूप से छः प्रकार की जानी जाती है।

ऋग्वेद ७/८७/५ में कहा है- **तिस्रो... भमीरुपरा षड्विधाना।**

वेद में पृथ्वी के छह महाद्वीपों की ओर संकेत किया गया है। ये छहों महाद्वीप सात महाद्वीपों की ओर संकेत करते हैं। ये ही छह महाद्वीप महाभाष्य व्याकरण १/११/११ में सात सात महाप्रदेश (द्वीपों) हैं। ये हैं १. जम्बू २. प्लक्ष ३. शाल्मल ४. कुश ५. क्रौंच ६. शोक और सातवाँ पुष्कर।

अथर्ववेद १२/१/४४ में कहा गया है कि भूमि की अपनी गुहों (गर्भों) में अनेक प्रकार के कोष निहित हैं ये मुझको स्वर्णादि बहुमूल्य धन दे।

तीसरे प्रकार की चट्टानों से सम्बन्धित गंधक, और अन्य पाँच वस्तुएँ निहित रहती हैं। अद्भुत ब्रह्माण्ड में कहा गया है कि-

पृथ्वी तटति, स्फुटती, कूजती, कम्पति।
ज्वलति, रुदति धूमायति।।

अर्थात् इस पृथ्वी में सात विकार होते हैं वे चट्टानी भागों में उत्पन्न होते हैं। ये सात विकार हैं-

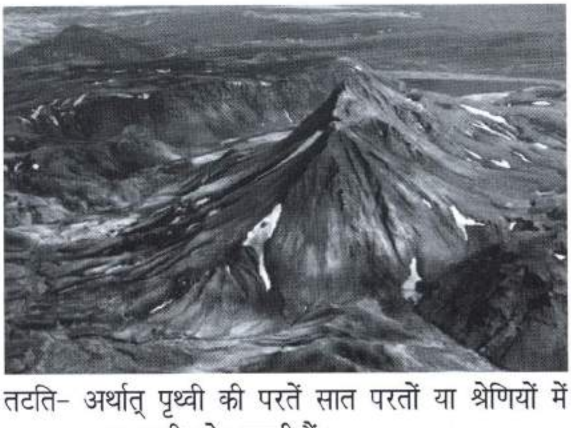

तटति- अर्थात् पृथ्वी की परतें सात परतों या श्रेणियों में बदल कर ऊपर की ओर उठती हैं।

स्फुटति- पृथ्वी की परतों में स्फोटन होता है।

कूजति- यह पृथ्वी हर समय कुछ गर्जना करती रहती है।

कम्पति- यह पृथ्वी काँपती (कम्पन करती) रहती है।

रुदति- यह तरल पदार्थों (पेट्रोल, गैस आदि) को अपने से बाहर क्षेपण करती हुई रुदन करती है।

धूमायति- यह पृथ्वी गहरे काले धुएँ और अन्य गैसों को अपने से दूर फेंकती है।

उपर्युक्त कारणों से पृथ्वी की तीन परतों में अनेक प्रकार के

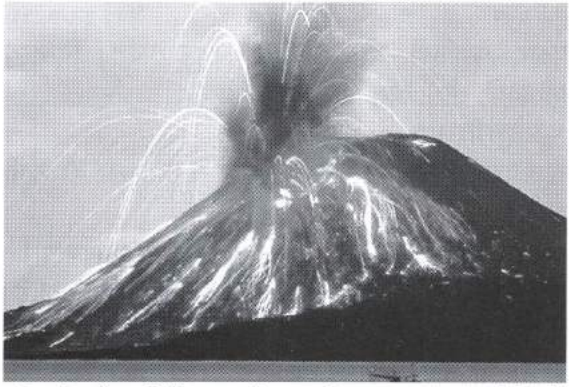

परिवर्तन हो जाते हैं। इन तीन परतों का ज्ञान सहज ही में हो जाता है। पर ये तीन परतें पृथ्वी में नहीं हैं। भू तांत्रिक (भूगर्भ विद्या विशारद) इन परतों को नहीं समझ सके हैं। पृथ्वी के अन्दर के भागों से उष्ण (गर्म) भाप से आग्न्यांतक लहर इन सात परतों में होकर निकलती है। अग्नि का प्रवाह (धारा) पृथ्वी की भीतर के निम्न भाग में इन सात धाराओं में गुजरती हुई बाहर निकलती है। यही बात ऋग्वेद के निम्न मंत्र में कही गई है।

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे।
पृथिव्या: सप्त धामभि:।। - ऋग्वेद १/२२/१६

भौतिक तत्त्व जो पृथ्वी के प्रमुख भीतरी भागों में हैं- वे सात परतों के द्वारा जो पृथ्वी के प्रत्येक भाग में विस्फोट करती है भगवान! ये वैज्ञानिक हमारी उस विशेष भाग से रक्षा करें।

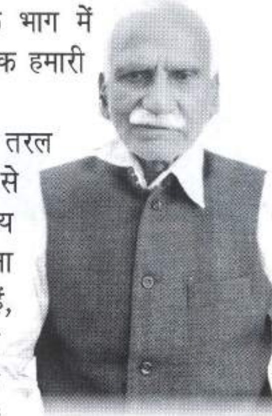

यहाँ दर्शाया गया है कि पृथ्वी का लावा तरल पदार्थ पृथ्वी की उन सात परतों में से होता हुआ निकलता है और यह कतिपय दुर्घटनाओं को जन्म देता है। उस दुर्घटना के कारण पर्वतों की चोटियाँ गिरती हैं, झीलें, समुद्र और पृथ्वी पर कतिपय पठारों का जन्म होता है। कहा गया है कि पृथ्वी की ये सात परतें पृथ्वी में स्थित हैं।

- डॉ. ब्रजमोहन जावलिया
चौसर कल्याण निलयम्, १०१ भट्टयानी चौहट्टा
उदयपुर- ३१३००१

□□□

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्य, अहिंसा, दया-भाव
की महिमा है अपरम्पार।
जिसको इनका साथ मिले,
उसे पूजे यह संसार।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए
१५००० रु.

विश्व शांति का केवल एक ही मार्ग है 'वैदिक धर्म'

जैसे सत्य एक ही होता है, असत्य अनेकों हो सकते हैं। दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा केवल एक ही हो सकती है, टेढी-मेढी अनेकों हो सकती हैं। वैसे ही धर्म भी एक ही हो सकता है बाकी मत, पंथ, सम्प्रदाय अनेकों हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। किसी भी जीव के प्रति अन्याय, पक्षपात व अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्राणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपने सभी पुत्र व पुत्रियों को एक समान ही प्यार करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वर प्रदत्त होगा वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा। वेद ईश्वर के बनाए हुए हैं इसलिए वैदिक धर्म यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्ण मानव मात्र का हो सकता है। बाकी जितने भी धर्म के नाम से प्रस्तावित मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं वे सब किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, वह चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, उसके अल्पज्ञ होने के नाते कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरूर जरूर रहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा और दूसरों के मत वालों को कम पसन्द करेगा। यही भेदभाव लड़ाई-झगड़े की जड़ है और एक दूसरे को अलग थलग करती है और दुःख का कारण है। विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। जैसे ईसाई मत ईशा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था, पारसी मत मूसा ने चलाया था, सिख मत गुरु नानक ने चलाया था जैन मत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्ध मत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का सर्वतोमुखी कल्याण नहीं हो सकता और मत-भेद बने रहने के कारण विश्व में सुख व शान्ति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं-

१. वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त धर्म है- मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमित्तिक ज्ञान की 'अपेक्षा' अधिक है। पशु-पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक और नैमित्तिक ज्ञान बहुत कम होता है। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है जैसे खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना, रोना-हँसना तथा सन्तान पैदा करना आदि। मानवेतर प्राणियों को इन कामों का फल नहीं मिलता कारण ये हर जीव के लिए करने जरूरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमित्तिक ज्ञान, यह सिखाने से सीखा जाता है। वह ज्ञान मनुष्य में अधिक है, इसलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं, यह चारों वेद चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु आदित्य व अंङ्गिरा थे, उनके हृदय में ईश्वर ने चारों वेदों का प्रकाश क्रमशः किया। वैसे तो चारों वेदों का संदेश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरुषों ने सुना। पर ब्रह्मा ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लोगों को

सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्रों व पौत्रों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनाना और सुनना की परम्परा चालू हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का आविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्रायः समाप्त हो गई, पर दक्षिण में अभी तक भी चलती आ रही है। इसलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं जिसका तात्पर्य है सुन-सुनकर कर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यही ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। जिन कामों को करने से मनुष्य धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेदानुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है जो मानव मात्र का अन्तिम लक्ष्य है, जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म ही एक सच्चा धर्म है जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है और दूसरों को भी सुखी व प्रसन्न रख सकता है। इसलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

२. वैदिक धर्म ही प्राणी मात्र से प्रेम रखने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सिखाता है। किसी से भी भेदभाव रखने की बात नहीं सिखाता इस कारण वैदिक धर्म मानव मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म उस पिता के द्वारा चलाया हुआ है। हम सब उस परमपिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। पिता अपनी सन्तान का भला व कल्याण करना चाहता है इसलिए ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में किया। वेदों में इतिहास भी नहीं है, कारण यह आदि ग्रन्थ है। इतिहास बाद में बनता है।

३. वेदों में न कोई कुछ घटा सकता है और न कोई कुछ बढ़ा सकता है यहाँ तक कि स्वयं ईश्वर भी। कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञानवान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है, अतः परिवर्तन की आवश्यकता ही नहीं। बाकी हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए काफी मिलावट कर दी है परंन्तु वेदों में ये स्वार्थी ब्राह्मण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे हैं कारण इनके स्वर में वे मिलावट करेंगे तो पदपाठ आदि से पकड़े जाएँगे। इसलिए ईश्वरीय ज्ञान वेद आज भी हमारे पास ज्यों के त्यों हैं। इस अद्वितीयता से यह सिद्ध भी होता है कि यह वेद ज्ञान ईश्वर का है।

४. मानव मात्र का धर्म वही हो सकता है जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो। बाद में चला हुआ धर्म मानव मात्र का नहीं हो सकता। कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म अवश्य होगा। बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंथ व सम्प्रदाय ही है जो वर्ग विशेष द्वारा माना जाता है।

५. वेद किसी देशीय भाषा में नहीं हैं, वेद संस्कृत भाषा में हैं जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है। अन्य धर्म ग्रन्थ किसी देशीय भाषा में हैं इसलिए उनमें निहित धर्म मानव मात्र का धर्म नहीं हो सकता।

६. वेद सृष्टिक्रम के अनुसार हैं। वेदों में सृष्टिक्रम के विरुद्ध कोई बात नहीं है। मनुष्यों द्वारा चलाए गए मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए सृष्टिक्रम के विरुद्ध बातें बतलाते हैं जैसे ईसाई लोग कहते हैं कि ईशा की शरण में आ जाओ तुम्हारे सब पाप धुल जायेंगे और मोक्ष के अधिकारी बन जाओगे। मुस्लिम भाई कहते हैं मोहम्मद साहब ने

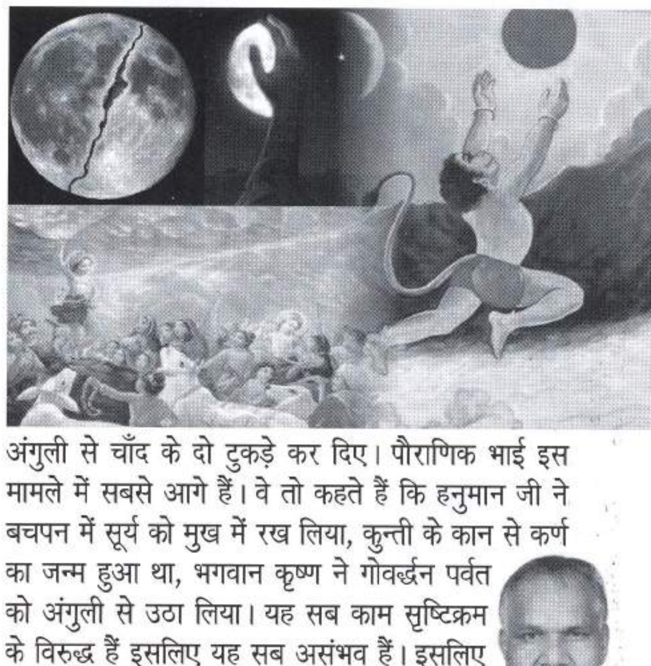

अंगुली से चाँद के दो टुकड़े कर दिए। पौराणिक भाई इस मामले में सबसे आगे हैं। वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती के कान से कर्ण का जन्म हुआ था, भगवान कृष्ण ने गोवर्द्धन पर्वत को अंगुली से उठा लिया। यह सब काम सृष्टिक्रम के विरुद्ध हैं इसलिए यह सब असंभव हैं। इसलिए यह सब अन्धविश्वास है। वैदिक धर्म में इन सब बातों का कोई स्थान नहीं है। यह धर्म केवल बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्मत है उसी बात को मानता है जिसे हर व्यक्ति को मानना चाहिए और जो यथार्थ है।

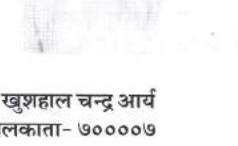

- खुशहाल चन्द्र आर्य
१८०- महात्मा गाँधी रोड़ (दो तल्ला), कोलकाता- ७००००७
चलभाष- ०९८३०१३५७९४

धैर्य (धृति या सहनशीलता)

प्राचीन भारतीय संस्कृति या वैदिक धर्म में, सभी प्राचीन शास्त्रों में, मानव को सर्वप्रथम मार्गदर्शन करने वाले प्राचीन भारतीय संविधान निर्माता महर्षि मनुकृत मनुस्मृति में भी, रामायण, महाभारत, पुराण आदि सभी प्राचीन एवं अर्वाचीन ग्रन्थों में, धर्म के दश लक्षणों का विस्तार से वर्णन किया गया है। मनु जी के अनुसार-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ - मनु. ६/९२

इन दश लक्षणों में सर्वप्रथम लक्षण के रूप में धृति (धैर्य सहनशीलता) है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ से ही मानव ही नहीं जीवमात्र में सहनशीलता का अभाव रहता है। इसलिए मनु जी ने एवं हमारे सारे शास्त्रों में धृति को सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रथम स्थान दिया है। यद्यपि इस समय की अपेक्षा प्राचीन समय में आर्यजनों में धृति (धैर्य या सहनशीलता) के अनेकों उदाहरण मिलते हैं।

यदि प्राचीन इतिहास को देखा जाए, प्राचीन घटनाओं पर विचार किया जाये तो इस देश में धैर्य के उदाहरणों की कमी नहीं है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का जीवन हमारे लिए धैर्य का एक आदर्श उदाहरण है। रामचन्द्र जी अयोध्या प्रवास काल में अपनी जननी कौशल्या की अपेक्षा कैकेयी के पास ज्यादा रहते थे। परन्तु जब मन्थरा के बहकावे में आकर माता कैकेयी ने राम को वनवास जाने का वर माँग लिया तब भी राम ने कैकेयी के प्रति वैसे ही श्रद्धा भक्ति बनाये रखी। जिस मन्थरा की प्रेरणा से श्रीरामचन्द्र जी को वनवास मिला वनवास से वापस लौटने पर राम सबसे पहले चरण वन्दना के लिए माता कैकेयी के पास पहुँचे। फिर मंथरा को भी आश्वासन देते हुए कहा कि आज भी आप हमारी वैसी ही पालन करने वाली माता जी हैं, हम आपकी गोद में खेले हैं अतः आप निर्भयता पूर्वक रहें अब हम आपकी सेवा करेंगे। जब अयोध्या से निकल कर सारथी सुमन्त्र को अगले दिन प्रातःकाल वापस भेजने लगे, तब श्रीरामचन्द्र जी ने महाराज दशरथ एवं माता कैकेयी को धैर्य धारण करने का संदेश दिया। इसी प्रकार महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में परदादा भीष्म जी की प्रेरणा पर श्री कृष्ण के सम्मान करने की बात आयी तो शिशुपाल इसे सहन नहीं कर सका। वह श्रीकृष्ण जी का विरोध करके उन्हें गालियाँ देने लगा। तब कई राजा उनको मारने के लिए उठे। तब श्रीकृष्ण ने कहा, कि यह मेरी बुआ का बेटा है। इसलिए मैं शिशुपाल की सौ गालियों को सहन करूँगा।

भारतीय इतिहास में सहनशीलता का अपूर्व उदाहरण देखिए- जहाँ दादू जी ठहरे हुए थे उस नगर का कोतवाल दादू जी की प्रशंसा सुनकर उनसे मिलने के लिए गया। जब दादू जी अपने निवास पर नहीं मिले तो उनके भक्तों ने बताया कि दादू जी तो रास्ता साफ करने के लिए जंगल गए हैं। तब कोतवाल ने अपना घोड़ा उधर ही दौड़ाया। जंगल में आकर उसने देखा कि एक लंगोटधारी व्यक्ति कुदाल से खोद-खोद कर काँटे निकाल रहा है। तब कोतवाल ने दो तीन बार उससे दादू जी का पता पूछा पर वे कुछ न बोलकर अपना काम करते रहे। उससे नाराज होकर कोतवाल ने उनके ऊपर चाबुक से प्रहार किया तो उनका खून बहने लगा। तब फिर कोतवाल ने सोचा कि यह जरूर पागल व्यक्ति है। आगे चलकर एक आदमी कोतवाल से मिला। कोतवाल ने जब उससे पूछा कि दादू भक्त कहाँ हैं तो

उस व्यक्ति ने कहा कि आप तो दादू भक्त को पीछे छोड़ आये जो रास्ते में काँटे बीन रहे हैं वही दादूभक्त हैं। तब कोतवाल को बड़ा पश्चाताप हुआ। और वह वापस जाकर उनके पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाकर माफी माँगने लगा, तब दादू जी बोले कोई बात नहीं आपने कुम्हार के पास जाकर अवश्य देखा होगा, कि घड़ा कैसा है यह परखने के लिए उसे ठोककर देखते हैं। आपने भी मुझे पहले ठोककर देख लिया कि दादू भक्त गुरु बनने लायक है या नहीं।

इस युग के वेदोद्धारक, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का जीवन पदे-पदे धैर्य एवं सहनशीलता का आदर्श उदाहरण है। उन्होंने सारा जीवन पाखण्ड का खण्डन किया, अज्ञान में भटके आर्य (हिन्दुओं), ईसाईयों एवं मुसलमानों को भी उनके ग्रन्थों के आधार पर उनके दोष दिखाकर शान्ति का मार्ग बतलाने का यत्न किया। परन्तु स्वार्थ में फंसे अज्ञानी लोगों ने उनकी भावना को नहीं समझा। अतः अधिकतर स्थान पर गाली गलौच के साथ उनके ऊपर ईंट, पत्थर भी बरसाये। स्वार्थी अज्ञानी लोगों द्वारा अनेकों बार विष देने के कारण उनका शरीर छलनी-छलनी हो गया। परन्तु उस विष देने वाले जगन्नाथ को भी ऋषि ने क्षमा ही नहीं किया अपितु मार्गव्यय देकर उसे नेपाल भगा दिया। ऐसा उदाहरण मिलना आज असंभव है। परन्तु दूसरों की ही बात क्या कही जाये हम आर्यजन थोड़ा भी मतभेद हो जाने पर एक दूसरे से बात करना ही छोड़ देते हैं।

फिर सामान्य जनता के विषय में क्या कहा जाये। इस समय संसार में धैर्य का अभाव या असहनशीलता सबसे बड़ा संकट बना हुआ है। पत्नी पति की बात नहीं सहती, थोड़ी सी बात पर पति पत्नी को मृत्यु के द्वार तक पहुँचा देता है। धैर्य न होने पर पिता पुत्र को मार देता है। धैर्य के अभाव होने के कारण पुत्र पिता को मारने से भी नहीं हिचकिचाता। स्कूल कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को यदि उनका अभिभावक एवं अध्यापक कुछ कह दे तो वे आत्महत्या कर लेते हैं। आजकल चौदह वर्ष के बालक-बालिकाओं को भी माता-पिता कुछ कहने से डरते हैं, क्योंकि कई बार बालक बालिका अपना जीवन संकट में डाल देते हैं। आजकल के सभी समाचार पत्र आत्महत्याओं की ऐसी घटनाओं से भरे रहते हैं। **अतः समाज को सुरक्षित रखने के लिए, समाज में शान्ति स्थापित करने के लिए धैर्य एवं सहनशीलता को आगे बढ़ाने की महती आवश्यकता है।**

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता- गुरुकुल आमसेना
वाया- खरियार रोड, जिला नुआपाड़ा, ओडिशा- ७६६१०९

□□□

क्या केवल सुमिरन से कल्याण हो सकता है- नहीं।

क्या ईश्वर का नाम ही सब रोगों को दूर करने व समृद्धि की दवा है- नहीं

निःसंदेह सुमिरण, ईश्वर उपासना करना अपने आप में एक सुकर्म है। लंगर लगाकर, भंडारा करके निर्धनों व बेसहारों की भूख मिटाना भी एक उत्तम कार्य है। परन्तु इतना करके यह समझ लेना कि इतने से भवसागर पार हो जायेगा, यह एक बहुत बड़ी भूल है। हम प्रतिदिन समाज में देखते हैं कि अधिकतर नाम जपने वाले तो अपने को व अपने परिवार को मामूली कष्टों, क्लेशों से भी छुटकारा नहीं दिला पाते, कल्याण की बात तो दूर रही।

अतः केवल सुमिरण, उपासना अपने आप में श्रेष्ठ कर्म होते हुए भी हमारा उद्धार करने में सक्षम नहीं हैं। यह केवल शुभ कर्म करने और पाप कर्म को त्यागने की प्रेरणा देते हैं। इसके साथ हमें कर्मशील बनना पड़ेगा, यम-नियम का पालन करना पड़ेगा। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग-द्वेष, ईर्ष्या, आदि मानसिक रोगों पर विजय प्राप्त करनी होगी। परोपकार, परसेवा, सुपात्रों को दान, असहायों पर दया व मानव मात्र से प्रेम जैसे कर्म भी करने पड़ेंगे। तभी हम शारीरिक, आर्थिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति कर सकेंगे। इसीलिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है-

यशः श्री श्रयतां मयि स्वाहा। - यजुर्वेद ३६/४

भावार्थ- यश, ऐश्वर्य तथा धन-धान्य मेरे अन्दर आश्रित हो कर रहें। मैं इनका स्वामी बनूँ।

आइये! सुमिरण उपासना के साथ साथ कर्मशील बनें। यम-नियम का अटलता से पालन करें।

संपादक- मदन लाल अनेजा,
साभार- कर्म ही बलवान
लेखक- विश्वम्बर नाथ अरोड़ा, प्रेषक- डॉ. एस. के. माहेश्वरी

□□□

लोकसभा चुनाव में स्वामी सुमेधानन्द जी पुनः विजयी

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, चिन्तक, मनीषी, इस न्यास के संस्थापक न्यासी, संन्यासी पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, जिन्होंने आर्य समाज के संगठन में अनेकानेक शीर्ष पदों को सुशोभित करते हुए संगठन को एक नई ऊर्जावान दिशा दी, ने जब सीकर में वैदिक आश्रम, पीपराली की स्थापना कर आसपास के क्षेत्र में प्रत्येक तबके के व्यक्ति को अपने स्नेह और आत्मीयता के आलिंगन में लेकर उनके पथ को प्रशस्त करने का कार्य प्रारम्भ किया, तभी संभवतः शीर्षस्थ राजनेताओं को सीकर क्षेत्र से जनप्रतिनिधि के रूप में वे सर्वाधिक उपयुक्त लगे। इसी क्रम में २०१४ में सम्पन्न लोकसभा में अवसर मिलने पर स्वामी जी ने अपने को एक लोकप्रिय कर्मठ, समदृष्टि से युक्त सांसद के रूप में स्थापित किया। इसी कारण २०१९ में पुनः भारतीय जनता पार्टी ने उनको सांसद का टिकट दिया। पूज्य स्वामी जी ने लगभग तीन लाख मतों से अपने प्रतिद्वन्दी को परास्त किया। यह निःसंदेह उनकी लोकप्रियता का प्रमाण है। हम न्यास, सत्यार्थ सौरभ परिवार और उदयपुर के आर्यजनों की ओर से स्वामी जी को हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करते हैं और आर्य जगत् की ओर से एक आर्य नेता को संसद में पुनः पहुँचाने के लिए सीकर की जनता का आभार प्रकट करते हैं।

– डॉ. अमृतलाल तापड़िया, संयुक्त मंत्री-न्यास

लोकसभा चुनाव में डॉ. सत्यपाल सिंह जी विजयी

डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य जगत् के ऐसे नेता हैं जिन्होंने पुलिस विभाग में उच्चतम पदों को सुशोभित करते हुए भी वैदिक साहित्य एवं सिद्धान्तों का तलस्पर्शी अध्ययन किया है। मुम्बई पुलिस प्रमुख के रूप में अपराध जगत् के विरुद्ध उनके द्वारा किए गए कार्य आज भी गर्व के साथ देखे जाते हैं। स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के पश्चात् २०१४ के लोकसभा चुनावों में उन्होंने उत्तरप्रदेश के बागपत क्षेत्र से चुनाव लड़कर विजय प्राप्त कर, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्यमंत्री के रूप में अपनी कार्यशैली की छाप छोड़ी। एक विद्वान् के रूप में डॉ. सिंह को आर्य जगत् में बड़ी श्रद्धा के साथ सुना एवं पढ़ा जाता है। अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि सभी प्रकार के जात्याधारित राजनैतिक प्रयासों को ध्वस्त कर माननीय डॉ. साहब ने पुनः बागपत क्षेत्र से ही संसद में प्रवेश किया है। हमें इस पर अत्यन्त गर्व है।

हम न्यास और सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से माननीय डॉ. साहब को हृदय से बधाई एवं शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करते हैं और आर्य जगत् की ओर से एक आर्य नेता को संसद में पुनः पहुँचाने के लिए बागपत संसदीय क्षेत्र की जनता का आभार प्रकट करते हैं।

– भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

उत्तरप्रदेश के टाण्डा क्षेत्र में, आर्य जगत् के वरिष्ठ आर्य नेता कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार जी आर्य (पूर्व प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, बंगाल) के कुशल संचालन में जो अभूतपूर्व उपलब्धियाँ 'बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज एवं डीएवी एकेडमी, टाण्डा' ने अर्जित की हैं, उनसे प्रायः आर्यजन परिचित हैं। इस विद्यालय में अढ़ाई तीन हजार मुस्लिम बच्चियाँ ही नहीं मुस्लिम शिक्षिकाएँ भी कार्यरत हैं। इन सभी को जब हम समवेत रूप में यज्ञादि कर्मों का सम्पादन करते हुए देखते हैं तो अलौकिक अनुभूति होती है। आनन्द जी की हार्दिक इच्छा थी कि ग्रीष्मकाल में १५० के लगभग शैक्षणिक स्टाफ को आर्य सिद्धान्तों और वैदिक जीवन पद्धति का परिचय देने हेतु एक शिविर का आयोजन किया जाये जिससे कि शिक्षक वर्ग में संस्कार जागृत हों ताकि वे इन संस्कारों को छात्र-छात्राओं तक सम्प्रेषित कर सकें। इस वर्ष यह शिविर २१ से २३ मई २०१९ में विद्यालय परिसर में आयोजित किया गया। जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय और श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने भाग लिया। शिक्षक-शिक्षिकाओं में शिविर में भाग लेने के उपरान्त जिस उत्साह का सृजन हुआ उसे देखकर ऐसे शिविरों की उपयोगिता का निश्चय होता है। शिक्षक व शिक्षिकाओं ने स्वयं प्रतिवर्ष ऐसा शिविर लगाया जाय, ऐसा अनुरोध किया जिसे श्री आनन्द जी ने स्वीकार किया। इस विद्यालय में मुस्लिम पृष्ठभूमि की छात्राएँ भी सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषिग्रन्थों को पढ़ने में कितनी रुचि लेती हैं, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उत्तरप्रदेश में अभी हाल में आयोजित सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा में लगभग १८ छात्राओं ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। विद्यालय में प्रथम स्थान एक मुस्लिम बालिका फातिमा ने प्राप्त किया। जब विद्यालय की ओर से इस न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने छात्राओं को प्रमाण-पत्र एवं स्मृति-चिह्न प्रदान किए तो इस समूह में मुस्लिम छात्राओं की उपस्थिति के कारण दृश्य देखते ही बनता था। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि श्री आनन्द कुमार जी जैसे कर्मयोगी के नेतृत्व में यह विद्यालय दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करता रहे और युवा हृदयों में इसी प्रकार वैदिक सिद्धान्तों की श्रेष्ठता स्थापित होती रहे। – नारायण मित्तल, कोषाध्यक्ष-न्यास

समाचार

आर्य समाज सन्त नगर ने घर-घर पहुँचाए पक्षी पेय-जल पात्र

नई दिल्ली। मई ४, २०१६ दिल्ली की चिल-चिलाती धूप की तपिश से पक्षियों को कुछ राहत पहुँचाने हेतु आर्य समाज, सन्त नगर द्वारा आज पक्षी पेय-जल पात्र (परिंडे) वितरित किए गए। दक्षिणी दिल्ली के सन्त

नगर में घर-घर जाकर एक एक परिंडा देकर निवेदन किया गया कि गृह स्वामी इन परिंडों में जल भर कर ऐसे स्थान पर रखें जहाँ अधिकाधिक पक्षी आसानी से पेय-जल ग्रहण कर सकें। वितरण से पूर्व एक यज्ञ का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि वेदों में बलि-वैश्वदेव यज्ञ का विधान उन सभी प्राणियों के कल्याण के लिए ही किया गया है जो मानवों से इतर हैं। उनकी रक्षा, संरक्षण व संवर्धन हम सभी का परम कर्तव्य है।

वैदिक विदुषी दर्शनाचार्या विमलेश आर्या के नेतृत्व में सम्पन्न यज्ञ व परिंडा वितरण कार्यक्रम में आर्य समाज मन्दिर के कोषाध्यक्ष वीरेंद्र सूद, संरक्षक विजय कौशिक, संजीव कुमार, श्रीमती हितेश, पार्वती देवी व नन्हा बालक नील सहित अनेक लोग शामिल थे।

– विनोद बंसल, प्रवक्ता-विहिप, मो. ६८१०६४६१०६

योग-ध्यान,साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रिया यतिजी के सान्निध्य में दिनांक १५ से २१ अप्रैल तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए गए तथा योगदर्शन का पठन-पाठन भी कराया गया। शिविर में रोजड़ के आचार्य आत्मनजी विशेष रूप से पधारे हुए थे। आचार्यजी ने शिवरार्थियों की शंकाओं का समाधान भी कुशलतापूर्वक किया। श्री रामभिक्षु जी ने प्राणायाम व योगासनों का अभ्यास कराया। माँ सत्यप्रिया यतिजी तथा अन्य शिविरार्थियों के भजन होते रहे तथा पूज्य महात्मा चैतन्य स्वामी जी के आध्यात्मिक प्रवचनों का शिवरार्थियों पर विशेष प्रभाव रहा। शिविर में लगभग १०० शिवरार्थियों ने भाग लिया। २१ अप्रैल को धर्म सम्मेलन एवं ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया।

– भारतभूषण आनन्द आश्रम, प्रधान

सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

चित्तौड़गढ़ की सुप्रसिद्ध विदुषी डॉ. सुश्री सीमा श्रीमाली के पैतृक गॉव बिलिया (बिल्वपुरम्) में उनके निवास स्थान पर दिनांक १५ से १७ मई २०१६ में सामवेद परायण यज्ञ आयोजित हुआ। इस अवसर पर चिरंजीव अन्वीश का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया गया। यज्ञ के ब्रह्मा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। आर्य भजनोपदेशक श्री केशवदेव शर्मा के सुमधुर भजनों से उपस्थित श्रोता लाभान्वित हुये।

– सीमा श्रीमाली

आर्य समाज रावतभाटा का चिन्तन शिविर सम्पन्न

आर्य समाज रावतभाटा, कोटा का तीन दिवसीय वैदिक चिन्तन शिविर ५ मई २०१६ को सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डीएवी पब्लिक स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम थीं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान नरदेव आर्य ने की। विशिष्ट अतिथि अर्जुनदेव चढ्डा पूर्व जिला प्रधान, कोटा थे।

कार्यक्रम में दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने ब्रह्माण्ड व पिण्ड का सम्बन्ध स्थापित करते हुए बताया कि जैसे सूर्य और पृथ्वी अंतरिक्ष में एक दूसरे के आकर्षण में बंधा है, उसी प्रकार पति-पत्नी एक दूसरे के आकर्षण में बंधे हैं और नई-नई सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं। वैसे ही माता-पिता भी उत्तम संतान उत्पन्न करें। **आचार्य जी ने 'परमाणु विज्ञान' नामक पुस्तक लिखी है जिसमें वेदों के माध्यम से विज्ञान को समझाया गया है।**

वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान देने वाले आर्यजनों को साफा, शॉल, स्मृति चिह्न व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। जोधपुर से पधारे श्री किशनलाल गहलोत को 'आर्य विभूति', जोधपुर के श्री मदनलाल तंवर को 'आर्य विद्याश्री' सम्मान, ब्यावर के श्री मोहनलाल को 'आर्य जिज्ञासु' सम्मान, बिहार के श्री अशोक कुमार गुप्ता को 'आर्य प्रचारक' सम्मान, दिल्ली के कमल आर्य को 'आर्य मित्र' सम्मान से समलंकृत किया गया। इंदौर की वैदिक संसार पत्रिका के सम्पादक सुखदेव शर्मा को सम्मानित किया गया।

आर्य समाज रावतभाटा के सत्संग भवन के निर्माण में सहयोगी भामाशाहों में के.पी. ओझा, वीपी डिडवानिया, राधेश्याम गुप्ता, नरदेव आर्य आदि २७ भामाशाहों का व अन्य १३ सहयोगी महानुभावों का स्मृति चिह्न, शॉल, माला, साफा के द्वारा सम्मान किया गया।

– नरदेव आर्य

नेनोरा में वेद परायण यज्ञ

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव जी शास्त्री के पैतृक गॉव नेनोरा में ३० वॉ वेदपरायण यज्ञ सामवेद परायण यज्ञ के रूप में दिनांक ०७ से ०६ जून २०१६ तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आचार्य योगेन्द्र जी याज्ञिक, होशंगाबाद, डॉ सीमा जी, चितौड़गढ़, पं. नरदेव जी भरतपुर, पं. केशव देव जी सुमेरपुर आदि पधार रहे हैं।

– आर्य समाज, नैनोरा

छः दिवसीय आदर्श विद्यार्थी शिविर सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा आयोजित छः दिवसीय आदर्श विद्यार्थी शिविर के समापन समारोह में रविवार को शिविरार्थियों को संस्कारवान बनाने हेतु रचनात्मक सत्र आयोजित किए गए। ५८ शिविरार्थियों को आचार्य शिव प्रकाश शास्त्री के निर्देशन में यज्ञ प्रशिक्षण और श्री अशोक जैन द्वारा योगासन, सूर्य नमस्कार व प्राणायम का अभ्यास करवाया गया। मोटिवेशनल स्पीकर श्री आशीष सिंघल ने विद्यार्थियों को अध्ययन तकनीकें सिखाते हुए माता-पिता व आचार्य की आज्ञा पालन करने हेतु प्रेरित किया।

श्रीमती शारदा गुप्ता ने अन्न का अनादर न करने व ईमानदारी रखने की शिक्षाएँ दी। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने शाकाहार अपनाने व बुराइयों से दूर रह कर अनुशासित जीवन की ओर बढ़ने हेतु मार्गदर्शन दिया। स्वागत श्रीमती ललिता मेहरा ने व आभार शिविर संयोजिका श्रीमती सरला गुप्ता ने दिया।

आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लालजी आर्य व कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल द्वारा शिविरार्थियों को वैदिक साहित्य, स्मृति चिह्न व प्रमाण पत्र वितरित किए गए। बच्चों ने शिविर के अनुभव सुनाकर आदर्श विद्यार्थी बनने का संकल्प लिया। अभिभावकों को दयानन्द सरस्वती की जीवनी, सन्तान निर्माण पुस्तिका आदि साहित्य वितरित किये गये।

- भूपेन्द्र शर्मा, मंत्री, आर्य समाज-हिरण मगरी, उदयपुर

आर्यसमाज, नेमदारगंज का शताब्दी महोत्सव

आर्य समाज नेमदारगंज, नवादा (बिहार) का शताब्दी महोत्सव एवं प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक ७ से १० नवम्बर २०१६ तक भव्य रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य समाज के नेतृत्व से अनेक शीर्ष अधिकारीगण, विद्वद्जन व विदुषियां सम्मेलन की शोभा बढायेगें।

- संजय सत्यार्थी, संयोजक

शोक संवेदना

सार्वदेशिक एवं आर्य वीर दल राजस्थान के वरिष्ठ व्यायाम शिक्षक, प्रान्तीय कार्यकारिणी सदस्य, वैदिक विचारक, गुरुकुल झज्जर (यमुनानगर) के स्नातक, कुशल प्रधानाचार्य, श्रेष्ठ प्रबन्धक, सादगीपूर्ण व्यवहार, हंसमुख प्रवृत्ति वाले 'श्री पूनमचन्द जी शास्त्री' (आबूपर्वत) के अकस्मात् देहान्त से आर्यजगत् में शोक की लहर है। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें तथा शोकग्रस्त परिवार व मित्रजनों को धैर्य धारण करने की शक्ति दें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

गुरुकुल आबू पर्वत का वार्षिक उत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत का २६ वाँ वार्षिक उत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह दिनांक २५ से २७ मई २०१६ को पूर्ण भव्यता के साथ गुरुकुल परिसर में मनाया गया। नवीन छात्रों को प्रवेश परीक्षा लेकर गुरुकुल में प्रविष्ट किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान् श्री कमलेश कुमार शास्त्री एवं अन्य विद्वानों के उद्बोधनों से उपस्थित आर्यजनों ने लाभ उठाया।

- आचार्य ओम प्रकाश आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव संपन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का चुनाव, निर्वाचन अधिकारी श्री रामपाल विद्याभास्कर, धर्मवीर सिंह जी व ओम प्रकाश जी विद्यावास्पति की देख रेख में सर्वसम्मति से संपन्न हुए। चुनाव में जोधपुर के विजय सिंह जी भाटी को प्रधान, जयपुर के श्री देवेंद्र कुमार शास्त्री को मंत्री, जयपुर के डॉ. संदीपन कुमार को कोषाध्यक्ष व जयपुर के ही श्री अशोक कुमार शर्मा को पुस्तकालयाध्यक्ष चुना गया।

इसके अतिरिक्त जगदीश प्रसाद आर्य, जयपुर, डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, जयपुर, रवि शंकर आर्य, भरतपुर, रमेश गोस्वामी, कोटा, मदन लाल आर्य, अजमेर, सेवा राम जांगिड़, जोधपुर, नरदेव आर्य, उदयपुर व स्वामी सुखानन्द, बीकानेर को उपप्रधान पद पर निर्वाचित किया गया व साथ ही अंतरंग सभा के लिए १४ सदस्यों का निर्विरोध निर्वाचन किया गया।

- देवेन्द्र शास्त्री, मंत्री- आर्यप्रतिनिधि सभा, राजस्थान

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०४/१९ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०४/१९ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), परमजीत कौर; दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढ़ी (बिहार), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री श्रृयाशुं गुप्ता; मनियाँ, श्री पं. मूल चन्द वशिष्ठ; रावली (नूह), श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्री इन्द्रजीत देव; यमुना नगर (हरियाणा), श्री हर्ष वर्द्धन आर्य; नेमदारगंज (बिहार), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; टी.टी. नगर (भोपाल), श्री सोमपाल सिंह यादव; रामपुर, श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), प्रधान आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजय नगर (राज.), सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), रूपादेवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री गणेशदत्त गोयल; बुलन्द शहर, श्री ब्र. विशाल आर्य; गुडा विश्नोईया, श्री किशनाराम आर्य (बिल्लू); श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर, श्री रामदत्त आर्य; मनियाँ, श्री पूरनलाल वर्मा; बरेली, श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म. प्र.), श्री फूल सिंह यादव; मुरादनगर (उ. प्र.)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १६ पर अवश्य पढ़ें।

तम्बाकू : एक महाविष

तम्बाकू को जहर भी कहा जा सकता है, और ऐसा जहर जिसके खाने की लत लग जाए तो चाहकर भी नहीं छोड़ा जा सके। इसका सेवन करके व्यक्ति धीरे-धीरे मौत के मुँह में जाता रहता है।

बीड़ी, सिगरेट, सिगार, जर्दा, खैनी, चौरट, चुट्टा, धुमटी, हुकली, चिलम, हुक्का, गुटखा, सुरती, तम्बाकू वाला पान, गुल इत्यादि सभी तम्बाकू से बने होते हैं। यदि आप इनमें से किसी का भी सेवन कर रहे हैं तो इसका सीधा सा मतलब है कि आप तम्बाकू के नशे में हैं।

तम्बाकू में पाये जानेवाले हानिकारक तत्व तथा रसायन

तम्बाकू में मादकता या उत्तेजना प्रदान करने वाला सबसे हानिकारक तत्व निकोटीन पाया जाता है। इसकी मात्रा शरीर में बढ़ जाने से यह मृत्युदूत की तरह कार्य करता है। रिसर्च से पता चला है कि तंबाकू में २८ तरह के कार्सिनोजेनिक तत्व होते हैं जिनसे कैंसर हो सकता है।

धुएँ से निकलने वाली कार्बन मोनो ऑक्साइड गैस जहरीली होने के साथ-साथ शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा को कम कर देती है, जिससे शरीर के कई महत्वपूर्ण अंग जैसे कि दिमाग, हृदय, फेफड़े ठीक तरह से कार्य नही कर पाते। निकोटीन रक्तचाप को बढ़ाता है, जिससे दिल का दौरा पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। इन दोनों के अलावा तम्बाकू में कैंसर उत्पन्न करने वाले अनेक तत्व तथा रसायन पाये जाते हैं। जैसेकि टार, मार्श गैस, अमोनिया, कोलोडान, पापरीडिन, फॉस्फोरल प्रोटिक अम्ल, परफैरोल, ऐजालिन सायनोजोन, कोर्बोलिक ऐसिड, बेनजीन इत्यादि।

तम्बाकू सेवन से होनेवाली बीमारियाँ तथा स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव तम्बाकू से कैंसर

कैंसर होने के कारणों में सबसे बड़ा योगदान तम्बाकू का ही होता है। इससे फेफड़े का कैंसर हो सकता है, मुँह का कैंसर हो सकता है या फिर गले अथवा श्वसन नली का कैंसर हो सकता है। इसके अलावा पेट का कैंसर, किडनी तथा पैंक्रियाज में होने वाले कैंसर, ब्लैडर और मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में भी तम्बाकू महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

तम्बाकू से हृदय सम्बन्धी रोग

रक्त में निकोटीन तथा कार्बन की मात्रा बढ़ जाने से शरीर की नसों में थक्के जम जाते हैं, जिससे रक्त परिवहन में समस्या आ जाती है और शरीर का परिवहन तंत्र प्रभावित हो जाता है। यदि शरीर के किसी भाग में रक्त परिवहन ठीक से नही होता है तब हृदय उन जगहों पर रक्त भेजने के लिए जोर लगाता है, जिसके फलस्वरूप नसों में रक्तचाप बढ़ जाता है, रक्तचाप बढ़ जाने के कारण आपकी नसें फट सकती हैं तथा हृदयाघात भी हो सकता है।

तम्बाकू का फेफड़ों पर प्रभाव

मनुष्य का मुख्य श्वसन अंग फेफड़ा है। धुआंयुक्त तम्बाकू का सेवन हमारे फेफड़ों पर बहुत ही बुरा असर डालता है। यदि आप किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा छोड़े गये तम्बाकू का धुआं ग्रहण कर लेते हैं तो आपके फेफड़ों को भी उतना ही नुकसान होगा जितना उस तम्बाकू पीने वाले के फेफड़ों का होगा।

हमारे फेफड़ों में छोटे-छोटे लगभग ३० करोड़ अल्वेओली पाये जाते हैं जो रक्त में ऑक्सीजन मिलाने तथा कार्बन डाई-ऑक्साइड निकालने का कार्य करते हैं। तम्बाकू के सेवन अथवा उसके धूम्रपान करने से धुएँ के साथ जो कार्बन तथा टार हमारे फेफड़ों में चले जाते हैं, वो फेफड़ों में पायी जानेवाली सिलिया के बालों के पर्त पर जम जाते हैं, जिससे श्वांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। तम्बाकू के ज्यादा सेवन से फेफड़ों का कैंसर भी हो सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में तम्बाकू के सेवन में काफी कमी आई है। तम्बाकू के पैकेटों पर लिखे जाने वाली चेतावनी का इसमें बहुत बड़ा योगदान है। ऐसा भी कहा जाता है कि पूरे विश्व में होनेवाली हर ५ मौतों में से एक मौत तम्बाकू के कारण होती है। साथ ही आपकी जानकारी के लिए बता दें कि हर साल ३१ मई को तम्बाकू के कुप्रभाव से दुनिया को बचाने के लिये विश्व तम्बाकू दिवस मनाया जाता है।

❑❑❑

साभार - ज्ञान चौक

मैं ही क्यों?

कथा सरित

आर्थर एश अन्तर्राष्ट्रीय टेनिस में खेलने वाले सर्वप्रथम अफ्रीकी अमेरिकन खिलाड़ी थे। आर्थर एश एकमात्र अश्वेत पुरुष खिलाडी हैं, जिन्होंने Australian Open, French Open, Wimbledon और US Open खिताब अपने नाम किए हैं।

उनके शानदार टेनिस कैरियर के दौरान उनके जीवन में एक ऐसा मोड़ भी आया, जब ८० के दशक में उनकी Heart bypass Surgery हुई और इस ऑपरेशन के दौरान आर्थर ऐश को जो खून चढ़ाया गया, दुर्भाग्यवश वह HIV पॉजिटिव था जिससे आर्थर ऐश HIV संक्रमित हो गए।

जब सब को आर्थर ऐश की इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का पता चला, तो विश्व भर से उनके लिए सहानुभूति भरे पत्र आने लगे। एक दिन उन्हें एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि भगवान ने आपको इतनी बुरी बीमारी देने के लिए चुना, क्या आपके मन में यह प्रश्न नहीं आता कि 'मैं ही क्यों'? इस पत्र को पढ़ कर आर्थर मुस्कुराये और जानते हैं उन्होंने क्या जवाब दिया? उन्होंने जो जबाब दिया उसने उन्हें महान् लोगों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया। आर्थर एश ने जवाब में लिखा- पूरी दुनिया में ५ करोड़ बच्चे टेनिस खेलना शुरू करते हैं, जिनमें से ५० लाख बच्चे ही टेनिस की शिक्षा लेते हैं। जिसमें से ५ लाख बच्चे ही व्यावसायिक टेनिस ट्रेनिंग तक पहुँचते हैं। फिर जिनमें से ५० हजार सफल हो कर सर्किट तक आ पाते हैं, इसमें ५००० ग्राण्ड स्लेम तक जाते हैं, जिनमें ५० विंबलडन पहुँचते हैं। जिसके बाद ४ सेमीफाइनल और आखिरी २ लोग फाइनल में आते हैं और फिर एक विजेता बनता है।

जब मैंने उस विजय कप को हाथ में पकड़ा हुआ था तब भगवान से मैंने कभी नहीं पूछा- 'मैं ही क्यों?'

और जब आज मैं दर्द में हूँ तो भगवान से नहीं पूछना चाहिए- 'मैं ही क्यों'?

कितनी सकारात्मक सोच, क्या महान् नजरिया है। मित्रों! जब खुशियों के समय, सफलताओं के समय नहीं कहा 'मैं ही क्यों' तो फिर मुश्किल समय में भी क्यों कहूँ 'मैं ही क्यों'।

मित्रो! जब इंसान के अन्दर कृतज्ञता, शुक्रगुजार, आभारी होने का नजरिया होता है, धन्यवाद करने की आदत होती है, फिर उसे उन चीजों की, लोगों की, उन अवसरों की कीमत का पता होता है जो उसे मिली हैं फिर उसे किसी चीज की शिकायत नहीं होती। फिर सुख और दुःख में वो एक जैसा रहता है।

❑❑❑

साभार- अन्तर्जाल

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

सत्यार्थप्रकाश का नाम मैंने अपने भाई से सुना था परन्तु पूर्ण जानकारी आज प्राप्त हुयी। आज सत्यार्थ प्रकाश भवन के गाइड द्वारा चित्रों की मदद से बहुत कुछ बताया गया। अत्यन्त खुशी हुई। स्वामी जी वाकई महान् आत्मा थे। जय आर्य, जय भारत - **प्रदीप चौहान, करनाल**

मैंने यहाँ आकर अंधविश्वास से हटकर कुछ बातें सीखीं। एक प्रश्न मेरे जेहन में था कि एक महिला बन्दर को कैसे जन्म दे सकती है। आज यहाँ पर (श्री राम चित्रदीर्घा के अवलोकन पर) यह सिद्ध हो गया है कि ऐसा कुछ नहीं था। ये सब अंधविश्वास है। आर्ट गैलेरी में जब मैं गया तो ऐसा लगा कि मैं कहीं स्वर्ग में आ गया हूँ। **- पृथ्वी सिंह, बाड़मेर**

यहाँ आकर मन को शान्ति मिली। शंकाएँ दूर हुईं। सत्य के साक्षात् दर्शन किये। सभी जानकारियाँ मिलीं। रामायण, महाभारत के बारे में बहुत अच्छा बताया। क्रान्तिकारियों के जीवन के बारे में भी जाना। धन्यवाद। **- अनिल कुमार शर्मा, जयपुर**

सत्यार्थ–पीयूष

देवता कौन?

महीधर यजु. २/१० के भाष्य में **'मयीदामिन्द्र इन्द्रियं दधातु'** के अर्थ में इन्द्र का अर्थ परमेश्वर ही करते हैं। यजु. ११/१४ में इन्द्र को अजन्मा माना है वह निश्चय ही परमेश्वर है।

एकेश्वरवाद–
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्य:।
अस्माकमस्तु केवल:।। – ऋ. १/७/१०
ईश्वर इस मंत्र में सबके कल्याण के लिये आदेश करता है– 'हे मनुष्यों! तुम्हें कभी मुझे छोड़कर अन्य को उपास्य देव नहीं मानना चाहिये। क्योंकि मुझसे भिन्न अन्य कोई ईश्वर नहीं है। ऐसा होना पर (भी) जो कोई भी ईश्वर में अनेकता का आरोप करता है, उसे मूर्ख ही मानना चाहिये।

उव्वट– स्वीकार करते हैं कि देव गुणवाचक संज्ञा है। यजु. ३१/१६ के भाष्य में लिखते हैं:- तेज से दीप्त योगी लोग भी देव हैं। पाठक विचार करें कि उव्वट स्वीकार करते हैं कि जो भी मनुष्य योग मार्ग पर चलकर आत्मोन्नति की पराकाष्ठा को प्राप्त कर लेते हैं वे देव संज्ञा धारण करते हैं। **इससे स्पष्ट है कि देव योनि कोई योनि विशेष है जो आकाशादि में रहते हैं वरदान तथा श्राप देते हैं आदि आदि कल्पनाऐं भ्रममूलक**

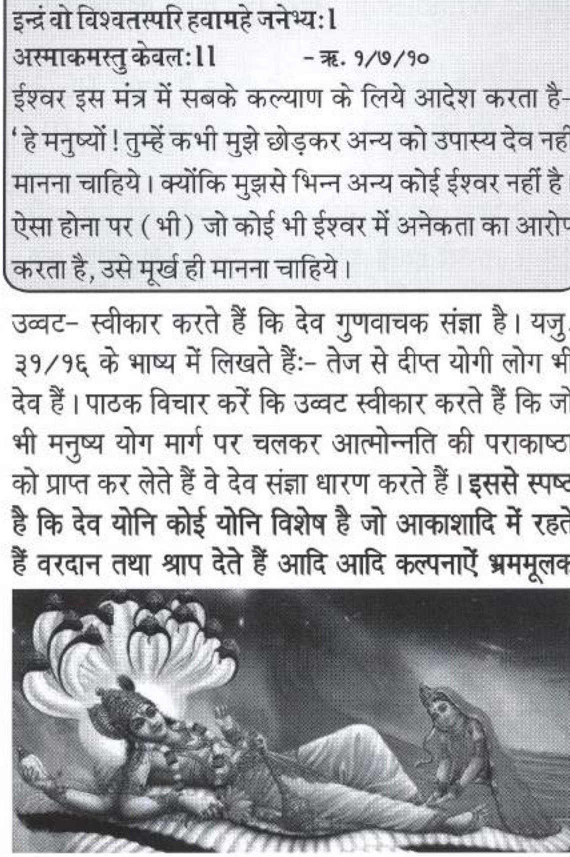

हैं। सिद्धान्ततः ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त वेदभाष्यकार भी इसे स्वीकार नहीं करते।

बृहदारण्यकोपनिषद् १/४/६ में स्पष्ट ही दिया गया है–
यदिदमाहुरमुं यजामुं यजेत्येकैकं देवम्।
एतस्यैव सा विसृष्टिरेष उ ह्येव सर्वे देवा:।।
जो यह कहते हैं कि अमुक देवता का याग करो, अमुक देवता का याग करो ऐसा एक-एक देवता के याग को पृथक्-पृथक् कहते हैं वह इसी (एक अखण्ड ब्रह्म) की विसृष्टि है व्यष्टिरूप है। निश्चय ही सभी देव यह (ब्रह्म ईश्वर) ही हैं।
महर्षि दयानन्द द्वारा देवता विषयक उद्‌घाटित सत्य –
यास्कमुनि ने देव शब्द का अर्थ करते हुए लिखा है– देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा, यो देवः सा देवता इति।' अर्थात् जो कोई भी दान देने वाला हो, प्रकाशित करने वाला हो, सत्योपदेश करता हो, द्यु स्थान पर हो देव संज्ञा में आ जाता है। उदाहरण के तौर पर सूर्य सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करने से, चन्द्र औषधि अन्न आदि का प्रेरक होने से देव श्रेणी में हैं। ये तथा अग्नि, वायु, पृथिवी आदि इसी प्रकार देव हैं। माता, पिता, आचार्य, अतिथि भी देव हैं। विद्वानूजन भी देव हैं। जो मनुष्य उदात्त गुणों को धारण कर परोपकार में निमग्न रहते हैं, देव ही हैं। वास्तव में जो कोई मनुष्य को देता है देव है। सूर्य, वायु, अग्नि, पर्जन्य इसी से देव हैं। ये सभी स्वरूप में दिव्य हैं तथा मनुष्य को कुछ देते हैं। इसी प्रकार जो मनुष्य विद्वान् हैं, जिनका चरित्र ऊँचा है उन्हें भी देवताओं की संज्ञा दी गई। मनुस्मृति में कहा गया है कि जो सात्विक पुरुष हैं वे देव तुल्य हैं– **'देवत्वं सात्विका यान्ति।'**

एकेश्वरवाद–
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदु:।।
– ऋ. १/१६४/३६
जिसमें सब देव अधिष्ठित हैं वह (देवाधिदेव) परम व्योम (हृदयाकाश) में है।

वैदिक शब्दों के अर्थ की तीन-चार प्रक्रियाएँ प्रसिद्ध हैं– आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक और आधियाज्ञिक। आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सनातन, सर्वान्तर्यामी, निराकार परमेश्वर ही देव/देवता व देवी है। जीवात्मा भी देव है तथा शरीर में उसके चक्षु, श्रोत्र, मन इत्यादि इन्द्रियाँ और प्राण अपानादि सहयोगी शक्तियाँ भी देवनकर्म के कारण देव कहलाते हैं। आधिदैविक क्रिया में द्यौः, अन्तरिक्ष, पृथिवी, सूर्य, चन्द्र, तारे, नक्षत्र, विद्युत, अग्नि, जल, वायु, औषध, वनस्पति, अन्न, इत्यादि को देव कहा जाता है। आधिभौतिक प्रक्रिया में विद्वान्-विदुषी, योगी, उपदेशक, अध्यापक, राजा, न्यायाधीश, सभाध्यक्ष, सेनाध्यक्ष आदि को देव कहा जाता है तथा आधियाज्ञिक प्रक्रिया में सृष्टिरूप यज्ञ और तदनुरूप किये जाने वाले यज्ञ, ऋत्विज, यजमान, पुरोहित, ब्रह्मा, वेदों के मंत्र एवं उनके द्वारा वर्णित इन्द्र, अग्नि, मित्र, वरुण, सोम, अर्यमा, प्रजापति आदि को देव कहा जाता है। (डॉ. जयदत्त उप्रेती)।

क्रमशः ....

– अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाबबाग

□□□

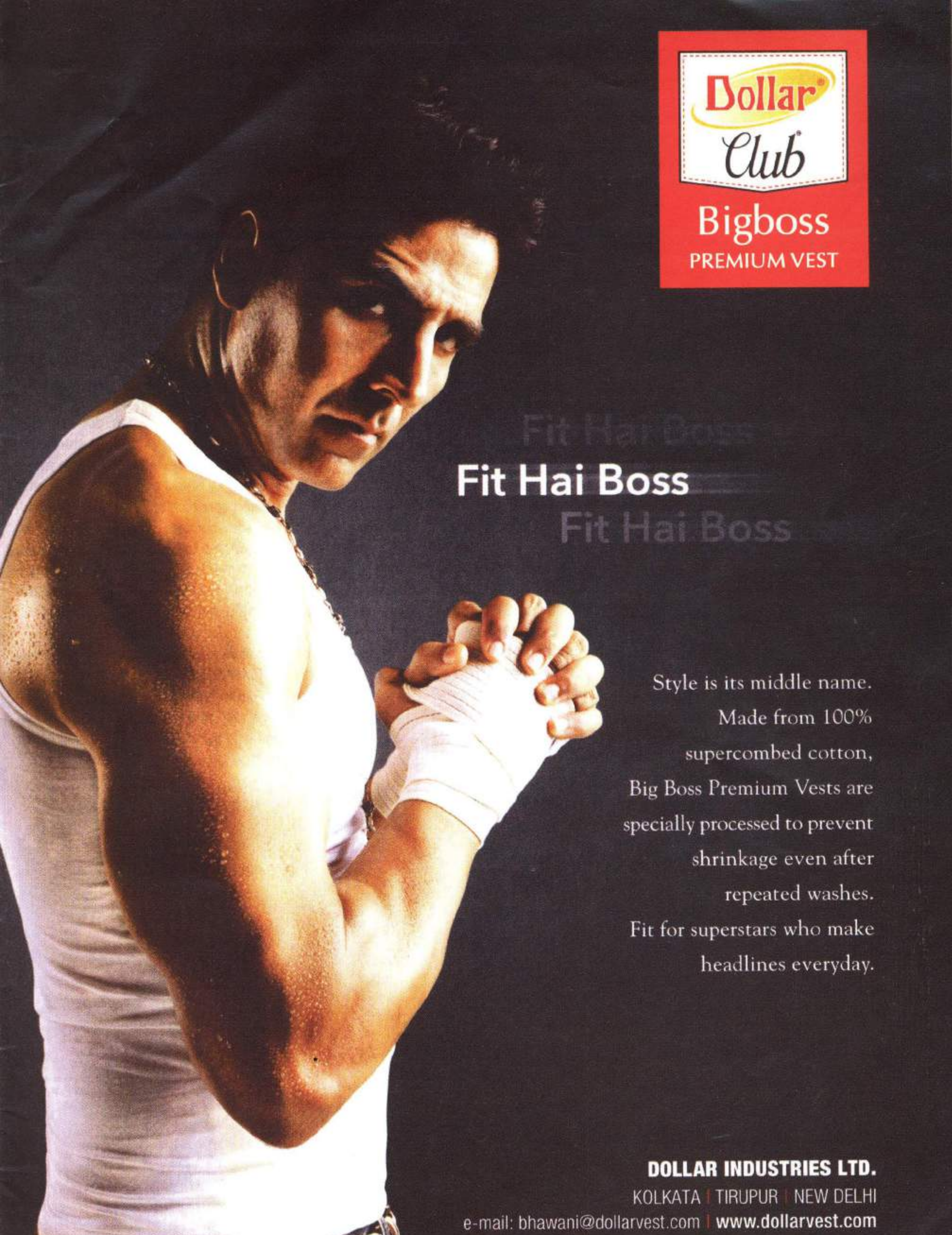
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name. Made from 100% supercombed cotton, Big Boss Premium Vests are specially processed to prevent shrinkage even after repeated washes. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 June-2019 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

'सृष्टि सकर्तृक' है। इस का कर्त्ता पूर्वोक्त ईश्वर है। क्योंकि, सृष्टि की रचना देखने और जड़ पदार्थ में अपने आप यथायोग्य बीजादि स्वरुप बनने का सामर्थ्य न होने से सृष्टि का 'कर्त्ता' अवश्य है।

सत्यार्थ प्रकाश स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः पृष्ठ ५८८

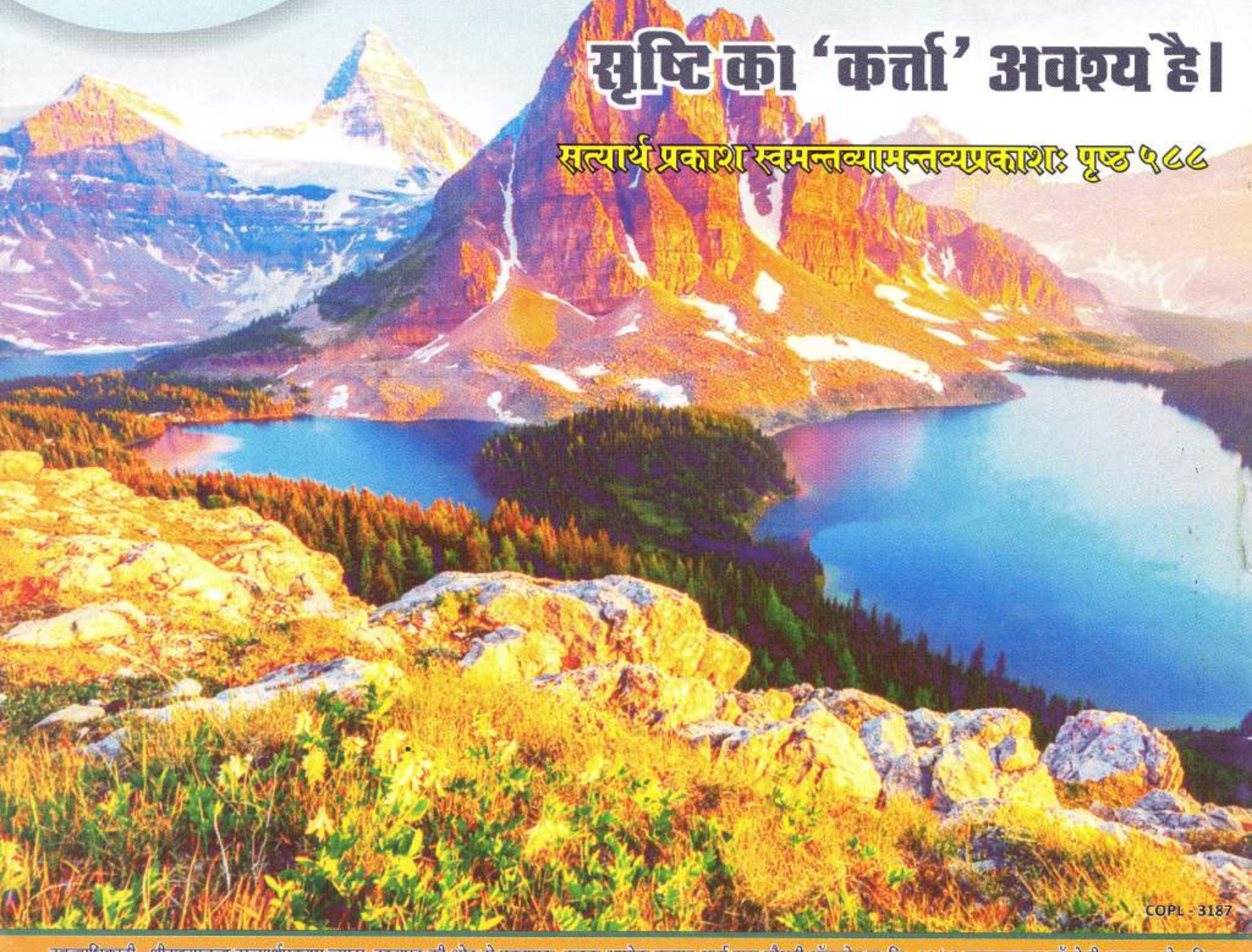

COPL - 3187

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर 313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर